हरिभूमि
महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि
रोहतक, रविवार, 14 सितंबर 2025

11 किसानों के लिए सरकार बना रही सार्वजनिक...

12 नांगल चौधरी हलके की 352.19 करोड़ की पेयजल परियोजना...

रसीद, मोहद साहिल, अरसीदा मेवात के निवासियों के नाम से बोल रही जिले की जमीन, ढाणी बाठोठा और काब्वी के किसानों को हो रही परेशानी

जांच का विषय : मेवात के लोगों ने महेंद्रगढ़ के किसानों की जमीन का कराया पंजीकरण, असल किसान परेशान

सतीश सैनी ▶▶| नारनौल

हरियाणा के महेंद्रगढ़ जिले में इन दिनों किसान अपनी फसलों के पंजीकरण को लेकर बेहद परेशान है। मेरी फसल मेरा ब्यौरा पोर्टल पर एक बड़े घोटाले का अंदेशा है। सामने आया है कि मेवात (नूंह) जिले के कुछ लोगों ने फर्जी तरीके से महेंद्रगढ़ के किसानों की जमीन का पंजीकरण करवा लिया है। इस धोखाधड़ी के कारण असली किसान सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं ले पा रहे है। अगर सरकार जांच करें तो बड़ा मामला सामने आ सकता है।

हरिभूमि विशेष पार्ट 1

यह मामला तब सामने आया जब महेंद्रगढ़ के कई किसान अपनी खरीफ फसलों का पंजीकरण करवाने के लिए सरकारी पोर्टल पर गए। उन्होंने पाया कि उनकी जमीन पहले से ही किसी और के नाम पर पंजीकृत है।

किसानों द्वारा जांच करने पर पता चला कि पंजीकरण कराने वाले लोग मेवात के रहने वाले है। किसानों का आरोप है कि यह सब सरकारी सहायता, मुआवजा और सब्सिडी जैसी योजनाओं का लाभ हड़पने के लिए किया जा रहा है।

इस घटना से जिला महेंद्रगढ़ के किसानों में भारी गुस्सा और आक्रोश है। उन्होंने तुरंत जिला प्रशासन से इस मामले में हस्तक्षेप करने और आरोपितों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई करने की मांग की है। किसानों का कहना है कि अगर इस समस्या का जल्द समाधान नहीं हुआ तो फसल खराब होने पर उन्हें मिलने वाली मुआवजा राशि और अन्य सरकारी लाभों से वंचित रहना पड़ेगा। किसानों ने भी सरकार से इस डिजिटल धोखाधड़ी को रोकने के लिए पोर्टल पर सुरक्षा और पहचान सत्यापन के उपाय बढ़ाने की मांग की है।

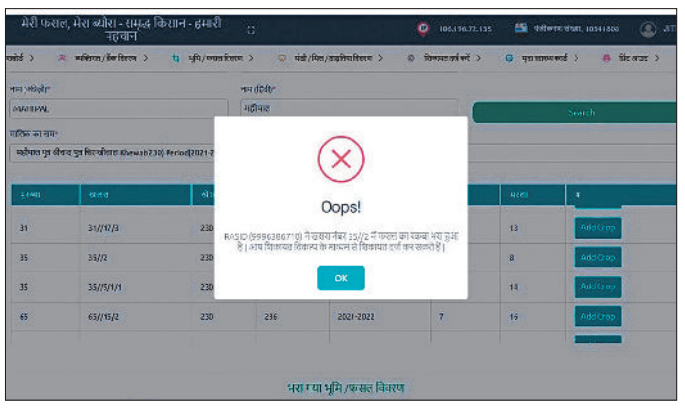

नारनौल। आनलाइन करने पर आ रहा यह ऑप्शन। फोटो : हरिभूमि

संदिग्धों का एक ही रट रटाया जवाब

हरिभूमि टीम ने जब पीड़ित किसानों से सम्पर्क किया तो पता चला कि पोर्टल पर सन्देश से प्राप्त मोबाइल नंबर पर सम्पर्क किया जाता है तो सभी संदिग्ध लोग केवल एक बात बोलते है कि 'जी मै तो ट्रक ड्राइवर हूं। मुझे नहीं पता। बच्चों ने गलत पंजीकरण करवा दिया होगा। आप अपने खेवट नंबर बता दो, अभी कटवा देता हूं। उसके बाद ठग द्वारा बीस से पच्चीस मिनट बाद उस रकबे को हटा देता है। उसके बाद ही किसान अपनी फसल को ऑनलाइन पोर्टल पर पंजीकरण करवा सकता है।

प्रशासन हस्तक्षेप करे तो हो सकता है करोड़ों रुपये की ठगी का खुलासा

गांव ढाणी बाठोठा और कांवी के किसानों का कहना है कि प्रशासन यदि इस मामले की गहनता से जांच करें तो जिले के ओर गांवों में भी इस तरह के खुलासे हो सकते है। किसान जितेंद्र कुमार कहता है कि सांझा खाते में उसके तीन एकड़ जमीन हिस्से में आती है। जब वह फसल पंजीकरण करवाने के लिए गया तो मोहद साहिल के नाम से पहले ही पंजीकरण दिखा रहा था। सन्देश से प्राप्त मोबाइल नंबर से सम्पर्क किया गया तो उन्होंने काफी बार तो फ़ोन उठाया। बाद में वापिस फ़ोन आया तो जवाब मिला बच्चों ने गलती से पंजीकरण करवा दिया होगा। जितेंद्र कुमार ने पुलिस में जाने की बात कही तो संदिग्ध बोला कि अभी दस मिनट में कटवा देता हूं। दस मिनट बाद मैं अपना पंजीकरण करवा पाया। उसके बाद क्षतिपूर्ति पोर्टल पर डाटा अपलोड करवाया। यदि जिला प्रशासन द्वारा ख़राब हुई फसल के पैसे देती है तो जिले के किसानों के करोड़ों रुपये इन संदिग्धों के पास जा सकते है।

मेवात के फ्रॉड लोगों द्वारा एक एकड़ वाला ही रकबा उठाया गया

हरिभूमि टीम को किसानों के इस फर्जीवाड़े की जैसे ही सूचना मिली टीम ने गांवों में सरकार द्वारा स्थपित सीएससी सेंटरों के संचालकों से जानकारी ली गई तो उन्होंने बताया कि बहुत से किसानों का फसल पंजीकरण करते समय मेवात के लोगों द्वारा भरा हुआ रकबा का सन्देश दिखाता है जिसमें उस किसान का नाम व फोन नंबर दिखाई देते है। अधिकत्तर वो ही रकबा दिखता है जो एक एकड़ या इससे अधिक का होता है। मिली जानकारी के अनुसार तीन या चार आदमी ही ऐसे जिनका नाम बार बार दिखाता है। इससे साफ़ अनुमान है कि जिले के किसानों के साथ फ्रॉड किया जा रहा है। फ्रॉड करने वाले लोगों का यह नया तरीका सामने आया है।

क्या कहते है उपायुक्त

हरिभूमि ने जब इस संबंध में उपायुक्त मनोज कुमार से बातचीत की तो उन्होंने कहा कि इस तरह की शिकायत नहीं मिली है। शिकायत मिलने पर जांच करवाकर मामले का समाधान करवाया जाएगा।

खबर संक्षेप

धनौंदा गांव में आंख जांच कैम्प आज

नारनौल। बाबा निहालचंद सेवादल की ओर से 14 सितंबर को गांव धनौंदा में आंखों का निःशुल्क कैंप लगाया जाएगा। जिसमें दवाइयां, आंखों का ऑपरेशन फ्री किया जाएगा।

अटेली में रक्तदान शिविर आज

मंडी अटेली। भगवान परशुराम गौड़ ब्राह्मण सभा की ओर से 14 सितंबर को पुराने बस स्टैंड पर रक्तदान शिविर व ब्राह्मण समाज के प्रतिभावान बच्चों के सम्मान समारोह का आयोजन किया जाएगा। जिसमे मुख्य अतिथि महासचिव भारतीय रेडक्रॉस सोसायटी हरियाणा महेश जोशी व स्वामी विट्ठल गिरि महाराज होंगे।

कनीना में स्वास्थ्य जांच शिविर आज

कनीना। कनीना मंडी स्थित लाला शिवलाल की धर्मशाला में 14 सितंबर को संस्था सेवा भारती की ओर से स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा। योगेश अग्रवाल ने बताया कि शिविर में हृदय रोग, नेत्र रोग, हड्डी व जोड़ रोग, स्त्री रोग, सामान्य रोग का उपचार किया जाएगा।

जूनियर स्टेट एथलेटिक्स प्रतियोगिता आज

मंडी अटेली। अटेली में 38वीं जूनियर हरियाणा स्टेट एथलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन 14 सितंबर सुबह नौ बजे राजकीय मॉडल संस्कृति स्कूल अटेली के खेल मैदान में किया जाएगा।

योजनाओं को सिरे चढ़ाने की प्रक्रिया शुरू

स्वास्थ्य सेवाओं का होगा कायाकल्प करोड़ों से बनेंगे पीएचसी एवं एसएचसी

> महेंद्रगढ़ जिले में पीएचसी, एसएचसी एवं बीपीएचसी के निर्माण के लिए स्वास्थ्य मंत्री आरती राव के नेतृत्व में सरकार ने मंजूर किए हुए हैं करोड़ों रुपये

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

स्वास्थ्य सेवाओं का कायाकल्प करने के लिए सरकार ने बड़ी पहल की है। जिले में इन सेवाओं को और अधिक प्रभावी व सुदृढ़ बनाने की दिशा में स्वास्थ्य विभाग द्वारा प्रयास तेज भी कर दिए गए हैं। इसके तहत करोड़ों की लागत से नए प्राइमरी हेल्थ सेंटर (पीएचसी), सब हेल्थ सेंटर (एसएचसी) और ब्लॉक पब्लिक हेल्थ केयर यूनिट (बीपीएचसी) बनाए जाने प्रस्तावित हैं। इन योजनाओं को सिरे चढ़ाने की प्रक्रिया शुरू हो गई है तथा टेंडर आमंत्रित किए जा रहे हैं, जो पंचायतीराज एवं पीडब्ल्यूडी विभाग की देखरेख में तैयार किए जाने हैं। इनके तैयार होने से आमजन को घरद्वार के नजदीक ही बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं और इलाज की समुचित व्यवस्था मिल सकेगी।

यह मिलेगा फायदा

ब्लॉक पब्लिक हेल्थ यूनिट (बीपीएचयू) में जांच, इलाज, टीकाकरण के साथ नियमित चलने वाले स्वास्थ्य कार्यक्रमों की जानकारी मिलेगी। यहां पर विभिन्न संचारी व गैर–संचारी रोगों की जांच की सुविधा होगी। जिन जांचों की यहां पर सुविधा नहीं होगी, उनके यहां सैंपल लिए जाएंगे और जांच के लिए जिला स्तरीय लैब में भेजे जाएंगे। लोगों को ऑनलाइन जांच रिपोर्ट भी उपलब्ध कराने की सुविधा रहेगी।

पंजीकृत मोबाइल नंबर पर रिपोर्ट आएगी। इसके साथ ही बीमारियों के नियंत्रण व रोकथाम के उपायों की जानकारी मुहैया कराई जाएगी। इसमें अलग से स्टाफ तैनात किया जाएगा। इसके बाद मरीजों को निजी पैथालॉजी व जिला मुख्यालय के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे।

महेंद्रगढ़। गांव मालड़ा बास में बना पीएचसी। फोटो : हरिभूमि

यह कहते हैं सिविल सर्जन

सिविल सर्जन डा. अशोक कुमार ने बताया कि सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना है कि हर नागरिक को सुलभ, समय पर और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त हों। सरकार इस दिशा में तेजी से प्रयास कर रही है। ये योजनाएं 15वें फाइनेंस कमिशन में स्वीकृत है, जिन पर अब कार्य चल रहा है। आने वाले समय में जिले के प्रत्येक स्वास्थ्य केंद्र को आधुनिक सुविधाओं से लैस किया जाएगा, ताकि गांव-गांव तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाई जा सकें और स्वास्थ्य मंत्री आरती राव के नेतृत्व में महेन्द्रगढ़ जिले में स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर किए जा रहे ये प्रयास निश्चित ही प्रशंसनीय है।

इन गांवों में बनने हैं नए भवन

पीएचसी: बायल, सिरोही बहाली, धनौंदा, बामनवास, बीगोपुर व पाली गांवों में पीएचसी बनाए जाएंगे। एक पीएचसी के निर्माण पर लगभग 55.50 लाख रुपये की लागत आएगी।
सब हेल्थ सेंटर: बेवल, तिगरा, बजाड़, बड़गांव, बिहाली, भूषण कलां, स्याणा, सिगड़ा, बूचावास, सिहोर, पाथेड़ा, सुरेती जाखल, सिसोठ, बसई, दूलोठ अहीर, निंबहेड़ा, जेरपुर, कुरहावटा, खुडाना, नावा, पल्ह, मांडोला, बाघोत, मांखरी, गोद, कलवाड़ी, कमानियां, कांवी, खैराना, लहरोदा, मोहल्ड़ा, निजामपुर, रघुनाथपुरा, तलवाना, हुडीना, अटेली गांव, नावदी, गढ़ी रूथल, बोचड़िया, अटाली, चेलावास, कारिया, पोता, गुजरवास, दुबलाना व बवानिया शामिल हैं, जहां पीएचसी बनना प्रस्तावित है। एक एसएचसी के निर्माण के लिए 1.43 करोड़ रुपये के बजट का प्रावधान किया गया है।
बीपीएचसी: एसडीएच कनीना (सीएचसी सेहलंग-पीडब्ल्यूडी बीएंडआर), सीएचसी दौचाना, सीएचसी सतनाली तथा सीएचसी अटेली मंडी में बीपीएचयू बनने हैं। एक बीपीएचसी के निर्माण के लिए अनुमानित बजट लगभग 40 लाख रुपये के का प्रावधान किया गया है।

100 बैड का अस्पताल हो रहा तैयार

महेन्द्रगढ़ के सिविल अस्पताल को 100 बैड के अस्पताल के रूप में विकसित किया जा रहा है। डॉक्टरों की तैनाती इसी क्षमता को ध्यान में रखते हुए की गई है। हालांकि फिलहाल अस्पताल की नई इमारत का निर्माण कार्य प्रगति पर है, इसलिए अस्थाई रूप से 50 बैड की सुविधा प्रारंभ की गई है। जैसे ही निर्माण कार्य पूर्ण होगा, 100 बैड की पूरी सुविधा आमजन के लिए उपलब्ध करा दी जाएगी।

नारनौल। लोक अदालत में केसों का निपटारा करते न्यायाधीश। फोटो : हरिभूमि

लोक अदालत में किया 11108 केसों का फैसला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से जारी दिशा निर्देशानुसार व जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष नरेंद्र सूरा के मार्गदर्शन व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी नीलम कुमारी की देखरेख में शनिवार न्यायिक परिसर नारनौल, महेन्द्रगढ़ व कनीना में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया।

इस लोक अदालत में अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश नितिनराज, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश वर्षा जैन, मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी विक्रमजीत सिंह व सिविल जज जूनियर डिवीजनमैडम कोपल चौधरी ने नारनौल, अतिरिक्त सिविल जज सिनियर डिवीजन प्रवीण कुमार ने कनीना, महेंद्रगढ़ में अतिरिक्त सिविल जज सिनियर डिवीजन गौरव खटाना न्यायधीशों की बैचों ने फैसले किए।

सीजेएम नीलम कुमारी ने बताया कि इस लोक अदालत में वाहन दुर्घटना मुआवजा केस, वैवाहिक मामले, जमीन अधिग्रहण मुआवजा से सम्बन्धित मामले, दीवानी मामले जैसे कि किराया, बैंक ऋण, बच्चों व पत्नी के लिए भरण पोषण, चेक बाउंस, साइबर क्राइम व राजीनामा योग्य फौजदारी मामलों को रखा गया। उन्होंने बताया कि इस लोक अदालत में कुल 13829 केस निपटारें के लिए रखें गए। जिनमें से 11108 केसों का फैसला किया गया। इसमें से 28 मोटर वाहन दुर्घटना से सम्बन्धित मामले जिनमें कुल 16550000 रुपये का मुआवजा दिया गया। उन्होंने बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से हेल्पलाइन नंबर 01282250322 चलाया हुआ है। जिस पर भी आमजन किसी भी प्रकार की कानूनी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

सीएमओ ने किया नांगल चौधरी सीएचसी का औचक निरीक्षण

- पार्षदों ने डॉक्टरों के पक्ष में रखा पक्ष
- चिकित्सक व स्टॉफ कर्मियों ने पुलिस में दर्ज कराई शिकायत
- मामले की छानबीन करके दोषियों के खिलाफ कार्रवाई करने की लगाई गुहार

हरिभूमि नयूज ▶▶| नांगल चौधरी

नांगल चौधरी। सीएमओ डॉ. अशोक कुमार को घटनाक्रम की जानकारी देते नपा के पार्षदगण। फोटो : हरिभूमि

सीएमओ ने सीएचसी का औचक निरीक्षण करके चिकित्सक स्टॉफ व कर्मचारियों की समस्याएं सुनी। शुक्रवार को चिकित्सक स्टॉफ के साथ हुई अभद्रता पर कड़ा संज्ञान लिया तथा सख्त कार्रवाई करने का आश्वासन दिया। इस दौरान नगर पालिका के पार्षदों ने सीएमओ को शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. अशोक कुमार व अन्य कर्मचारियों का मरीजों के साथ सकारात्मक बर्ताव से अवगत कराया।

नपा के वाइस चेयरमैन मुकेश शर्मा, पार्षद धर्मबीर, पार्षद अमन तंवर, पार्षद छविकांत सैनी, पार्षद कंवर सिंह जाखड़, पार्षद बंटी भार्गव, होशियार समेत शहर के कई प्रबुद्धजनों ने बताया कि सीएचसी के अंतर्गत विभिन्न गांवों में करीब 1.85 लाख आबादी है। शहर के निजी अस्पतालों में शिशु रोग विशेषज्ञ नहीं, करीब पांच साल पहले विभाग ने सीएचसी में डॉ. अशोक को नियुक्त किया था। उस दौरान सीएचसी में 100 से 125 मरीजों की ओपीडी होती थी, लेकिन बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. अशोक ने चार्ज संभालते ही मरीजों की सुविधाओं पर फोकस किया तथा बेहतरीन इलाज मुहैया कराया है। जिसकी बदौलत सीएचसी की ओपीडी 300 के पार पहुंच गई है। सीएचसी में मरीजों के लिए आईपीडी व्यवस्था उपलब्ध करवा दी। जिससे गंभीर बीमारियों का सुगमता पूर्वक उपचार होने लगा है, लेकिन शुक्रवार को सीएचसी में योजनाबद्ध तरीके से दो कथित पत्रकार घुसे और स्टॉफ के साथ बदतमीजी आरंभ कर दी। अंदर मरीजों की वीडियो क्लिप बनानी शुरू कर दी। जिसका उपस्थित डॉक्टरों ने विरोध किया और उच्चाधिकारियों का अनुमति पत्र प्रस्तुत करने को कहा। पार्षदों ने कहा कि डॉक्टर अशोक व स्टॉफ कर्मचारी पूरी निष्ठा से मरीजों का उपचार कर रहे हैं, उन्हें साजिश के तहत मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा है।

इस संबंध ने सीएमओ डॉ अशोक कुमार ने पार्षदों को आश्वासन दिया कि डॉ. अशोक उत्कृष्ट सेवाएं दे रहे हैं, जिससे सीएचसी की गरिमा भी बढ़ी है और मरीजों का विश्वास भी मजबूत हुआ है। दोषियों के खिलाफ विभाग कार्रवाई करेगा।

फैमिली आईडी विधायक ओमप्रकाश यादव ने विधानसभा में स्पीकर के सामने उठाई थी आवाज

युवाओं को अन्य पिछड़ा वर्ग का सर्टिफिकेट बनवाने में छूट, पिछड़े वर्ग के नियम बरकरार

> हरियाणा के लड़कों की शादी अधिकतर राजस्थान की लड़कियों के साथ हो जाती है

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

हरियाणा में अन्य पिछड़ा वर्ग और पिछड़ा वर्ग की सर्टिफिकेट परिवार पहचान पत्र के द्वारा बनाई जाती है। जिसमें माता-पिता का नाम अभ्यर्थी की दसवीं की अंक तालिका के अनुसार होना जरुरी किया गया था। अन्य राज्यों से आई हुई महिलाओं का जाति प्रमाण पत्र हरियाणा सरकार द्वारा जारी नहीं किया जाता है क्योंकि उनकी माता-पिता की फैमिली आईडी को अनिवार्य किया गया है, लेकिन अन्य राज्यों में फैमिली आईडी नहीं होने की वजह से उनके माता-पिता की आय का विवरण नहीं प्राप्त होता है।

अब केवल सरल पोर्टल पर अन्य पिछड़ा वर्ग में हरियाणा में जन्मे अभ्यर्थी को केवल उनके माता-पिता के नाम में त्रुटि की छूट दी गई है। युवाओं के इस मुद्दे को गम्भीरता से लेते हुए दैनिक हरिभूमि ने उठाया था।

इसी मुद्दे को नारनौल विधायक ओमप्रकाश यादव ने विधानसभा में स्पीकर के सामने जोरशोर से रखा। जिसका परिणाम हाल ही में ओबीसी सर्टिफिकेट में केवल नाम त्रुटि की छूट ही दी गई है। महेंद्रगढ़ जिले की सीमाएं राजस्थान के साथ लगने की वजह से हरियाणा के लड़को की शादी अधिकतर राजस्थान की लड़कियों के साथ हो जाती है। जिसके कारण विवाहित होकर आने वाली लड़कियों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। जिसकी वजह से उन लड़कियों को नौकरियों में आरक्षण की छूट नहीं मिल पाती है।

हरिभूमि

हरियाणा में कम से कम 15 वर्ष से निवास कर रही महिला को ही मिलेगा लाडो लक्ष्मी योजना का लाभ

नारनौल। 13 सितम्बर को प्रकाशित समाचार। फोटो : हरिभूमि

विधायक ने विधानसभा में रखा युवाओं का यह मुद्दा

विधानसभा के मानसून सत्र में नारनौल विधायक ओमप्रकाश यादव ने फैमिली आईडी से जाति प्रमाण नहीं बनने के मुद्दे को स्पीकर के माध्यम से सरकार के सामने रखा था। उन्होंने कहा कि सरकार ने बीसी और ओबीसी के लिए आरक्षण दे रखा है लेकिन बीसी और ओबीसी वर्ग के जिन लड़कों की शादी अन्य राज्यों में होती है तो उनकी पत्नियों को हरियाणा प्रदेश के अंदर आरक्षण का लाभ नहीं मिलता है। उनकी शादी को दस साल हो जाती है, फिर भी लाभ नहीं मिलता है। ये स्थिति परिवार पहचान पत्र योजना लागू होने के बाद हुई है।

दीनदयाल लाडो लक्ष्मी योजना भी महेंद्रगढ़ वासियों के लिए बनेगी पहेली

हरियाणा सरकार द्वारा दीनदयाल लाडो लक्ष्मी योजना भी 25 सितम्बर से शुरू होने जारी है। जिसमें महिलाओं को 15 वर्ष हरियाणा निवासी की शर्त रखी जा रही है। जो महेंद्रगढ़ वासियों के लिए पहेली बनने जा रही है। क्योंकि महेंद्रगढ़ जिले की पश्चिम, दक्षिण और पूर्वी सीमा का एक बड़ा हिस्सा राजस्थान राज्य से सटा हुआ है। जिसकी वजह से महेंद्रगढ़ वासियों की शादी राजस्थान होना स्वाभाविक है और लाडो लक्ष्मी योजना की शर्त 15 वर्ष वाली महिलाओं के लिए मुसीबत साबित होने वाली है। वैसे भी हरियाणा का लिंग अनुपात कम होने की वजह से दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, पश्चिमी बंगाल आदि राज्यों हरियाणा के लड़कों की शादी होने का सिलसिला जोरों पर है।

फ्लेक्सी कैप, मिड कैप और लार्ज कैप फंड्स में बढ़ा निवेश

■ इक्विटी फंड्स का नेट इनफ्लो 22% तक घटा ■ एएमएफआई ने अगस्त 2025 के आंकड़े जारी किए ■ अगस्त 2025 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के लिए मिला-जुला महीना रहा

बिजनेस डेस्क

एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) ने अगस्त 2025 के निवेश और रिडेम्पशन के लेटेस्ट आंकड़े जारी कर दिए हैं। ये आंकड़े म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री के ताजा रुझानों की दिलचस्प तस्वीर पेश करते हैं। अगस्त 2025 में निवेशकों ने जहां एक ओर इक्विटी फंड्स में लगातार पैसे डाले हैं, वहीं डेट फंड्स से बड़े पैमाने पर पैसे निकाले गए हैं। आंकड़ों के मुताबिक अगस्त 2025 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के लिए मिला-जुला महीना रहा। कुल नेट इनफ्लो 33,430 करोड़ रुपये रहा, जो जुलाई 2025 के 42,702 करोड़ रुपये की तुलना में करीब 22% कम है। हालांकि यह गिरावट दिखाती है कि निवेशक थोड़े सावधान हो गए हैं, लेकिन यह भी सच है कि यह लगातार 54वां महीना है जब इक्विटी फंड्स में नेट इनफ्लो देखने को मिला।

फ्लेक्सी, मिड और लार्ज कैप में इनफ्लो बढ़ा

अगस्त में सबसे ज्यादा निवेश फ्लेक्सी कैप फंड्स में आया। इस कैटेगरी में 7,679 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो दर्ज हुआ, जो जुलाई के 7,654.33 करोड़ रुपये के नेट-इनफ्लो के मुकाबले थोड़ा बेहतर रहा। मिड कैप फंड्स में भी 5,330 करोड़ रुपये का इनफ्लो रहा, जबकि जुलाई में यह 5,182 करोड़ रुपये था। दिलचस्प बात यह रही कि लार्ज कैप फंड्स में 2,835 करोड़ रुपये का नेट निवेश आया, जो जुलाई के 2,125 करोड़ रुपये से 33% ज्यादा रहा। हालांकि, स्मॉल कैप फंड्स में निवेश की रफ्तार थोड़ी धीमी पड़ी और इसमें नेट इनफ्लो जुलाई के 6,484 करोड़ रुपये से घटकर अगस्त में 4,993 करोड़ रुपये रह गया।

डेट फंड्स में निकासी का दबाव

अगस्त 2025 में डेट म्यूचुअल फंड्स ने बड़ा झटका खाया। कुल मिलाकर इस कैटेगरी से 7,980 करोड़ रुपये का नेट आउटफ्लो हुआ। यह तब है जब जुलाई 2025 में इन्हीं फंड्स में 1.07 लाख करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो दर्ज हुआ था। कई सब-कैटेगरी जैसे कॉरपोरेट बॉन्ड फंड्स, बैंकिंग एवं पीएसयू फंड्स और गिल्ट फंड्स से पैसे निकाले गए। इसका बड़ा कारण कॉर्पोरेट्स और संस्थागत निवेशकों की तरफ से मनी मार्केट और लिक्विड फंड्स से निकासी बताई जा रही है, जो आमतौर पर तिमाही खत्म होने के बाद होती है।

हाइब्रिड फंड्स का आकर्षण बरकरार

हाइब्रिड फंड्स में निवेशकों का भरोसा जारी रहा। अगस्त में इसमें 15,294 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो दर्ज हुआ। हालांकि यह जुलाई के 20,879 करोड़ रुपये से कम है, लेकिन फिर भी इससे संकेत मिलता है कि निवेशक बैलेंस्ड और डायनैमिक स्ट्रेटजी वाले फंड्स को पसंद कर रहे हैं।

गोल्ड ईटीएफ और इंडेक्स फंड्स रहे फेवरिट

गोल्ड ईटीएफ अगस्त में निवेशकों के बीच काफी पॉपुलर रहे. इनमें 2,190 करोड़ रुपये का नेट इनफ्लो आया, जो जुलाई के 1,256 करोड़ रुपये की तुलना में करीब 74% ज्यादा है. इससे यह भी पता चलता है कि सोने की कीमतों में लगातार मजबूती और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मौजूदा चुनौतियों के कारण निवेशक गोल्ड को सुरक्षित ऑप्शन मान रहे हैं। इंडेक्स फंड्स और अन्य ईटीएफ का आकर्षण भी बरकरार है। अगस्त में इंडेक्स फंड्स का एयूएम करीब 3.04 लाख करोड़ रुपये और नेट इनफ्लो 1,503 करोड़ रुपये रहा, जबकि अन्य ईटीएफ का एयूएम करीब 8.42 लाख करोड़ रुपये और नेट इनफ्लो 7,244 करोड़ रुपये रहा।

एनएफओ कलेक्शन में भारी गिरावट

जुलाई में म्यूचुअल फंड्स की 30 नई स्कीम्स या न्यू फंड ऑफर (एनएफओ) लॉन्च हुए थे और उनके जरिये 30,416 करोड़ रुपये जुटाए गए थे। लेकिन अगस्त में एनएफओ की संख्या घटकर 23 और जुटाई गई रकम सिर्फ 2,859 करोड़ रुपये रह गई।

फोलियो नए रिकॉर्ड पर, कुल एयूएम घटा

इंडस्ट्री का कुल एयूएम अगस्त में 75.19 लाख करोड़ रुपये रहा, जो जुलाई के 75.36 लाख करोड़ रुपये से मामूली रूप से कम है, लेकिन इस दौरान फोलियो की कुल संख्या बढ़कर 24.89 करोड़ हो गई। जुलाई में यह संख्या 24.57 करोड़ थी। यानी निवेशकों के लगभग 32 लाख नए खाते जुड़े, जो यह दिखाता है कि छोटे निवेशक लगातार इस इंडस्ट्री का हिस्सा बन रहे हैं। अगस्त 2025 का महीना इस लिहाज से अहम रहा कि इक्विटी फंड्स में पैसे आते रहे, लेकिन रफ्तार धीमी हुई। फ्लेक्सी कैप, मिड कैप और लार्ज कैप फंड्स में निवेशकों का भरोसा दिखा, जबकि स्मॉल कैप में सावधानी दिखी। दूसरी ओर, डेट फंड्स ने करारा झटका खाया. हाइब्रिड फंड्स और गोल्ड ईटीएफ निवेशकों को आकर्षित करते रहे।

निवेश का जैकपॉट : कुछ इक्विटी फंड्स ने 10 साल में दिया 533 से 678% तक रिटर्न

लंबी अवधि का मानक 10 साल मानें तो कई इक्विटी म्यूचुअल फंड सबसे बेहतर

सात फंड ऐसे हैं, जिनमें 20% सालाना से अधिक रिटर्न निवेशको को मिला

इन फंड्स को खरीदने वाले निवेशक भी मालामाल, जमकर किया निवेश

बिजनेस डेस्क

अगर आप भी निवेशक हैं या निवेश करने जा रहे हैं तो एक बार बाजार के बारे में रिसर्च जरूर कर लें। इससे आपको निवेश में आसानी रहेगी और पैसे का नुकसान नहीं होगा। बाजार में पैसा लगाने से पहले अपनी रिस्क क्षमता और लक्ष्य को जान लें। इसके बाद निवेश करेंगे जो मुनाफे में ही रहेंगे। म्यूचुअल फंड में निवेश करने जा रहे हैं तो हमेशा लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर चलें। म्यूचुअल फंड लंबी अवधि के निवेश के लिए सबसे अच्छे विकल्पों में एक माने जाते हैं। निवेश की अवधि जितना अधिक होगी, कंपाउंडिंग का उतना ज्यादा फायदा मिलेगा। लंबी अवधि का मानक 10 साल मानें तो कई इक्विटी म्यूचुअल फंड स्कीम निवेशकों के लिए जैकपॉट साबित हुई हैं। इनमें से 7 फंड तो ऐसे हैं, जिनमें 20 फीसदी सालाना से अधिक रिटर्न मिला है। इनका 10 साल में एबसॉल्यूट रिटर्न 533 से 678 फीसदी रहा है। इसका मतलब है कि इन्होंने इस अवधि में निवेशकों का पैसा 6 से 7.5 गुना बढ़ा दिया। हमने इस रिपोर्ट में ईटीएफ को शामिल नहीं किया है।

म्यूचुअल फंड में निवेश करने जा रहे हैं तो हमेशा लंबी अवधि का लक्ष्य लेकर चलें

●

बाजार में पैसा लगाने से पहले अपनी रिस्क क्षमता और लक्ष्य को पहचान लें

निप्पॉन इंडिया स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 22.78% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 7,78,532 रुपये (7.79 लाख)
- रेटिंग : 5 स्टार
- कुल एसेट्स : 64,821 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.64% (31 अगस्त, 2025)

क्वांट ईएलएसएस टैक्स सेवर फंड

- 5 साल का रिटर्न : 21.86% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 7,22,124 रुपये (7.22 लाख)
- रेटिंग : 3 स्टार
- कुल एसेट्स : 11,396 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.58% (31 अगस्त, 2025)

एचडीएफसी स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.47% सालाना
- लाख निवेश की वैल्यू : 6,43,857 रुपये (6.44 लाख)
- रेटिंग : 4 स्टार
- कुल एसेट्स : 36,294 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.69% (31 अगस्त, 2025)

एक्सिस स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.46% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,43,622 रुपये (6.43 लाख)
- रेटिंग : 3 स्टार
- कुल एसेट्स : 25,569 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.57% (31 अगस्त, 2025)

इन्वेस्को इंडिया मिड कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.39% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,39,594 रुपये (6.40 लाख)
- रेटिंग : 4 स्टार
- कुल एसेट्स : 8,063 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.56% (31 अगस्त, 2025)

एसबीआई स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.30% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,34,828 रुपये (6.35 लाख)
- रेटिंग : 3 स्टार
- कुल एसेट्स : 35562.96 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.73% (31 अगस्त, 2025)

क्वांट स्मॉल कैप फंड

- 5 साल का रिटर्न : 20.25% सालाना
- 1 लाख निवेश की वैल्यू : 6,32,195 रुपये (6.32 लाख)
- रेटिंग : 4 स्टार
- कुल एसेट्स : 28,758 करोड़ रुपये (31 अगस्त, 2025)
- एक्सपेंस रेश्यो : 0.72% (31 अगस्त, 2025)

क्या हैं इक्विटी फंड

इक्विटी फंड एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है जो मुख्य रूप से शेयर बाजार में निवेश करता है। इसका उद्देश्य निवेशकों को शेयर बाजार में निवेश करने का अवसर प्रदान करना है, जिससे वे अपने निवेश पर अच्छा रिटर्न प्राप्त कर सकें।

इक्विटी फंड के प्रकार

1. **लार्ज-कैप फंड:** ये फंड बड़े कैप शेयरों में निवेश करते हैं, जो आमतौर पर अच्छी तरह से स्थापित कंपनियों के शेयर होते हैं।
2. **मिड-कैप फंड:** ये फंड मध्यम आकार की कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं, जो आमतौर पर तेजी से बढ़ने वाली कंपनियां होती हैं।
3. **स्मॉल-कैप फंड:** ये फंड छोटी कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं, जो आमतौर पर उच्च जोखिम और उच्च रिटर्न की संभावना के साथ आते हैं।
4. **सेक्टोरल फंड:** ये फंड विशिष्ट क्षेत्रों या उद्योगों में निवेश करते हैं, जैसे कि टेक्नोलॉजी, फार्मास्यूटिकल्स, या ऑटोमोबाइल।

इक्विटी फंड के लाभ

1. **विविधीकरण:** इक्विटी फंड निवेशकों को विविधीकरण का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे वे अपने निवेश को विभिन्न शेयरों में फैला सकते हैं।
2. **पेशेवर प्रबंधन:** इक्विटी फंड पेशेवर फंड प्रबंधकों द्वारा प्रबंधित किए जाते हैं, जो निवेशकों के लिए निवेश के निर्णय लेते हैं।
3. **लिक्विडिटी:** इक्विटी फंड निवेशकों को अपने निवेश को आसानी से बेचने और नकदी प्राप्त करने का अवसर प्रदान करते हैं।

इक्विटी फंड के जोखिम

1. **बाजार जोखिम:** इक्विटी फंड शेयर बाजार में निवेश करते हैं, जो बाजार की अस्थिरता के कारण जोखिम भरा हो सकता है।
2. **कंपनी-विशिष्ट जोखिम:** इक्विटी फंड विशिष्ट कंपनियों के शेयरों में निवेश करते हैं, जो कंपनी-विशिष्ट जोखिमों के अधीन हो सकते हैं।
3. **इक्विटी फंड:** निवेशकों के लिए एक अच्छा विकल्प हो सकता है जो शेयर बाजार में निवेश करने के इच्छुक हैं और जोखिम उठाने की क्षमता रखते हैं

करोड़पति बनाने वाली स्कीमों में लोग कर रहे जमकर निवेश, आठ गुणा तक बढ़ा पैसा

सिर्फ 9 साल में छू लिया आसमानी आंकड़ा, 28,265 करोड़ कर डाले निवेश, एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश लगातार बढ़ रहा

अपने पैसे को लोग अलग-अलग स्कीम में निवेश करते हैं। किसी स्कीम में रिटर्न कम मिलता है तो किसी में ज्यादा। वहीं जो लोग जोखिम लेते हैं, वे एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में निवेश करते हैं। यह एक ऐसी स्कीम है जिसमें लगातार छोटी रकम के निवेश से ही व्यक्ति करोड़पति बन सकता है। एक नई रिपोर्ट के अनुसार, एसआईपी के जरिए म्यूचुअल फंड में हर महीने जमा होने वाला पैसा पिछले नौ सालों में लगभग आठ गुना बढ़ गया है। व्हाइटओक कैपिटल म्यूचुअल फंड की एक रिपोर्ट बताती है कि अगस्त 2016 में एसआईपी के जरिए कुल 3,497 करोड़ रुपये आए थे। अगस्त 2025 तक ये आंकड़ा बढ़कर 28,265 करोड़ रुपये हो गया है। इससे पता चलता है कि निवेशकों का एसआईपी पर भरोसा बढ़ रहा है। वे इसे पैसे बनाने का एक अच्छा तरीका मान रहे हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह लगातार वृद्धि दिखाती है कि एसआईपी में निवेशकों का विश्वास बढ़ रहा है।

कितना रहा रिटर्न : अगस्त 1996 से अगस्त 2025 के बीच एसआईपी से मिलने वाला सबसे ज्यादा रिटर्न 55.6 प्रतिशत रहा। वहीं, सबसे कम रिटर्न -24.6 प्रतिशत रहा। लेकिन अगर औसत रिटर्न की बात करें, तो यह 14-16 प्रतिशत के आसपास रहा। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने कितने समय के लिए निवेश किया है।

निवेश का कौन सा समय सही : रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि मार्केट में कब निवेश करना है, यह इतना जरूरी नहीं है जितना कि निवेश करते रहना। अगर आपने मार्केट के टॉप पर भी एसआईपी शुरू की थी, तो भी आपको लंबे समय में अच्छा फायदा हुआ होगा। उदाहरण के लिए, अगर किसी ने जनवरी 2008 में 10,000 रुपये की मंथली एसआईपी शुरू की थी, जो कि ग्लोबल फाइनेंशियल क्राइसिस से ठीक पहले का समय था, तो भी अगस्त 2025 तक उसका 21.2 लाख रुपये का निवेश बढ़कर 75.23 लाख रुपये हो गया होता। इस पर उसे लगभग 13 प्रतिशत का एक्सआईआरआर मिला होता। एक्सआईआरआर एक तरीका है जिससे पता चलता है कि आपके निवेश पर आपको कितना रिटर्न मिला है।

किस कैटेगरी का कितना रिटर्न : दिलचस्प बात यह है कि रिपोर्ट में यह भी पाया गया है कि मिड-कैप एसआईपी ने लॉन्ग टर्म में लार्ज-कैप और स्मॉल-कैप कैटेगरी से बेहतर रिटर्न दिया है। मिड-कैप एसआईपी का एवरेज रिटर्न 17.4 प्रतिशत रहा, जबकि लार्ज-कैप का 13 प्रतिशत और स्मॉल-कैप का 14.7 प्रतिशत रहा।

कोई भी लोन लेने से पहले फायदे और नुकसान को जान लें

फिक्स्ड, फ्लोटिंग या फिर हाइब्रिड होम लोन के लिए कौन-सी ब्याज दर बेहतर, फिक्स्ड रेट वाले लोन तब बेहतर होते जब ब्याज दरें बढ़ रही हों

तैयारी

बिजनेस डेस्क

जब लोन पर घर खरीदने जार रहे हों तो एक बार बैंकों की ब्याज दरों को जांच लें। किसी जानकारी से सलाह ले लें। इससे आपको परेशानी नहीं होगी और आसानी से घर खरीद सकेंगे। अक्सर जब लोग घर खरीदने के लिए होम लोन लेते हैं, तो सबसे बड़ा सवाल यही होता है कि किस तरह का इंटरेस्ट रेट चुना जाए। फिक्स्ड, फ्लोटिंग और हाइब्रिड तीनों विकल्पों के अपने फायदे और नुकसान हैं। सही चुनाव करने से आपकी ईएमआई और लंबे समय की फाइनेंशियल प्लानिंग पर बड़ा असर पड़ता है। इसलिए इस सवाल का जवाब लोन लेने से पहले ही जान लेंगे तो आसानी रहेगी।

फिक्स्ड इंटरेस्ट रेट लोन

- फिक्स्ड रेट में आपकी ईएमआई पूरी लोन अवधि या शुरुआती कुछ साल तक एक जैसी रहती है। इसका फायदा यह है कि ब्याज दरें बढ़ने पर भी आपकी ईएमआई नहीं बदलती। इससे आपको हर महीने का खर्च आसानी से मैनेज करने में मदद मिलती है। हालांकि, इसका नुकसान यह है कि अगर ब्याज दरें घट जाएं तो इसका फायदा आपको नहीं मिलेगा। साथ ही, शुरुआती दरें भी अक्सर फ्लोटिंग से ज्यादा होती हैं। यह विकल्प उन लोगों के लिए बेहतर है, जिन्हें स्थिरता चाहिए और ईएमआई में उतार-चढ़ाव नहीं चाहते।

फ्लोटिंग इंटरेस्ट रेट लोन

- फ्लोटिंग रेट आरबीआई की नीतियों और मार्केट की परिस्थितियों के हिसाब से बदलता है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि ब्याज दर घटने पर ईएमआई कम हो जाती है। इससे लंबे समय में यह फिक्स्ड से सस्ता साबित हो सकता है। होम लोन लेने वाले ज्यादातर लोग यही विकल्प चुनते हैं। मार्केट की स्थिति अर्थव्यवस्था में महंगाई और ब्याज दरों की दिशा होम लोन पर सीधा असर डालती है। जब महंगाई बढ़ती है तो बैंक ब्याज दरें ऊपर कर देते हैं ताकि जोखिम कम हो। वहीं स्थिर बाजार में ब्याज दरें अक्सर सस्ती हो जाती हैं। इसलिए टाइमिंग भी अहम फैक्टर है। लेकिन, फ्लोटिंग रेट की अपनी खामियां हैं। अगर ब्याज दर बढ़ जाएं तो **EMI** भी बढ़ जाती है। यह आपका पूरा बजट भी बिगाड़ सकती है। यह विकल्प उन लोगों के लिए ज्यादा सही रहता है, जो लंबे समय तक लोन लेने वाले हैं और ईएमआई में उतार-चढ़ाव सह सकते हैं।

हाइब्रिड इंटरेस्ट रेट लोन

- हाइब्रिड लोन में शुरुआती कुछ सालों तक ईएमआई फिक्स्ड रहती है और उसके बाद यह फ्लोटिंग में बदल जाती है। इस तरह पहले कुछ सालों तक स्थिरता मिलती है और बाद में मार्केट के हिसाब से ब्याज दरें घटने पर फायदा हो सकता है। हालांकि शुरुआती दरें फ्लोटिंग से थोड़ी ज्यादा हो सकती हैं और अगर बाद में ब्याज दरें बढ़ जाएं तो ईएमआई भी बढ़ेगी। यह विकल्प उन लोगों के लिए सही है जो शुरुआत में ईएमआई स्थिर रखना चाहते हैं और आगे चलकर रिस्क लेने को तैयार हैं।

क्या है एक्सपर्ट की राय?

जानकारों का कहना है कि फिक्स्ड रेट वाले लोन तब बेहतर होते हैं जब ब्याज दरें बढ़ रही हों। ये उन लोगों के लिए ठीक हैं जिन्हें स्थिरता चाहिए या लगता है कि दरें आगे और बढ़ेंगी। वहीं, फ्लोटिंग रेट घटती ब्याज दर वाले माहौल में सही रहते हैं। हाइब्रिड होम लोन उन लोगों के लिए होते हैं जो शुरू में कुछ साल तक निश्चित ईएमआई चाहते हैं, लेकिन आगे चलकर बाजार के हिसाब से ब्याज दरों का फायदा उठाना चाहते हैं।लोन की अवधि का असर लोन का टेन्योर जितना लंबा होगा, कुल ब्याज का बोझ उतना ज्यादा होगा। छोटी अवधि का लोन लेने पर ईएमआई थोड़ी बड़ी होगी लेकिन ब्याज की बचत काफी होगी। इसलिए अपनी क्षमता के हिसाब से संतुलित अवधि चुनना बेहतर रहता है।

लोन लेने की लागत स्थिर

अभी की स्थिति देखें तो लोन लेने की लागत स्थिर हो रही है। आरबीआई की ओर से रेपो रेट में हालिया कटौतियों से ग्राहकों का भरोसा भी बढ़ा है। इस समय फ्लोटिंग रेट होम लोन की ब्याज दर अपेक्षाकृत कम हैं। इसलिए यह उन लोगों के लिए अच्छा विकल्प है जो कुल ब्याज खर्च घटाना चाहते हैं।'होमबायर्स को आखिरी फैसला लेने से पहले कुछ बातों पर जरूर विचार करना चाहिए। जैसे कि अभी अलग-अलग लोन ऑप्शन पर ब्याज दर में कितना फर्क है और लोन अवधि कितनी लंबी है। अगर लोन लंबे समय के लिए है तो फ्लोटिंग रेट से फायदा हो सकता है, क्योंकि आगे चलकर अगर दरें घटती हैं तो कुल ब्याज का बोझ कम होगा।

ऐसे कर सकते हैं प्लानिंग

- **1. वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन :** अपनी वित्तीय स्थिति का मूल्यांकन करें और देखें कि आप कितना होम लोन ले सकते हैं। अपनी आय, व्यय, और बचत को ध्यान में रखें।
- **2. होम लोन की आवश्यकता :** अपने होम लोन की आवश्यकता को निर्धारित करें। आपको कितनी राशि की आवश्यकता है? आप कितने समय में लोन चुकाना चाहते हैं?
- **3. ब्याज दरें और शर्तें :** विभिन्न बैंकों और वित्तीय संस्थानों की ब्याज दरें और शर्तें तुलना करें। सबसे अच्छा विकल्प चुनें जो आपकी आवश्यकताओं को पूरा करता है।
- **4. लोन की अवधि :** लोन की अवधि का चयन करें जो आपकी वित्तीय स्थिति के अनुसार उपयुक्त हो। लंबी अवधि के लोन में मासिक किस्त कम होती है, लेकिन कुल ब्याज अधिक होता है।
- **5. प्रोसेसिंग फीस और अन्य शुल्क :** प्रोसेसिंग फीस और अन्य शुल्कों को ध्यान में रखें। ये शुल्क आपके लोन की कुल लागत को बढ़ा सकते हैं।
- **6. क्रेडिट स्कोर :** अपने क्रेडिट स्कोर को जांचें और सुनिश्चित करें कि यह अच्छा है। एक अच्छा क्रेडिट स्कोर आपको बेहतर ब्याज दरों और शर्तों के लिए योग्य बना सकता है।
- **7. विकल्पों की तुलना :** विभिन्न होम लोन विकल्पों की तुलना करें और सबसे अच्छा विकल्प चुनें जो आपकी आवश्यकताओं को पूरा करता है।
- **8. वित्तीय सलाहकार से परामर्श :** यदि आवश्यक हो, तो वित्तीय सलाहकार से परामर्श लें। वे आपको होम लोन के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान कर सकते हैं और आपको सबसे अच्छा विकल्प चुनने में मदद कर सकते हैं।

पांच लाख की रकम को कैसे करें निवेश कि मिले बढ़िया मुनाफा

अक्सर ज्यादा रिटर्न देने वाले विकल्पों की तलाश में रहते हैं निवेशक

प्लानिंग

बिजनेस डेस्क

अगर आपके पास 5 लाख रुपये हैं और आप इन्हें निवेश करना चाहते हैं तो यह रिपोर्ट आपके लिए बेहतर हो सकती है। देखने में आया है कि भारतीय निवेशक हमेशा सुरक्षित और ज़्यादा रिटर्न देने वाले निवेश विकल्पों की तलाश में रहते हैं। अगर आप भी अपनी एकमुश्त रकम को निवेश करना चाहते हैं और इसके लिए बेहतर ऑप्शन की तलाश में हैं एक बार जरूर देखें की आपके लिए पोस्ट ऑफिस की सकीम बेहतर रहेगी, बैंक की एफडी या फिर डेट फंड इनमें से कहा आपको ज्यादा मुनाफा मिल सकता है। निवेश का चुनाव हमेशा व्यक्ति की फाइनेंशियल कंडीशन, गोल्स और रिस्क सहने की क्षमता पर निर्भर करता है। ऐसे में जब 5 लाख या 10 लाख रुपये के एकमुश्त निवेश की बात आती है तो लोगों के लिए सही विकल्प चुनना और जरूरी हो जाता है क्योंकि इतनी बड़ी रकम को ऐसे ही कहीं भी निवेश नहीं किया जा सकता। ऐसे में बैंक की तरह पोस्ट ऑफिस एफडी भी वर्षों से सुरक्षित और विश्वसनीय निवेश ऑप्शन रही है। वहीं, हाल के वर्षों में डेट फंड भी एक लोकप्रिय ऑप्शन के तौर पर उभर रहा है। लोग इसे एफडी से बेहतर रिटर्न देने वाला ऑप्शन मानते हैं। आइए समझते हैं कि अगर 5 लाख रुपये का निवेश कहां ज्यादा मुनाफा दे सकता है।

एकमुश्त निवेश के लिए सही विकल्प चुनना बेहद जरूरी

पोस्ट ऑफिस एफडी भी वर्षों से सुरक्षित और विश्वसनीय निवेश ऑप्शन रही

अब हाल के वर्षों में डेट फंड भी लोकप्रिय ऑप्शन के तौर पर उभरा

पोस्ट ऑफिस फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) की खासियत

- **सुरक्षा:** ये सबसे सुरक्षित निवेश विकल्पों में से एक है क्योंकि ये सरकार द्वारा समर्थित है.
- **निश्चित रिटर्न:** आपको निवेश की शुरुआत में ही ब्याज दर पता चल जाती है, जिससे रिटर्न का अनुमान लगाना आसान हो जाता है।
- **लॉक-इन अवधि:** तमाम टेन्योर के लिए उपलब्ध है, जैसे 1, 2, 3 और 5 साल।
- **रेगुलर ब्याज भुगतान:** आप मासिक, त्रैमासिक या वार्षिक आधार पर ब्याज प्राप्त करना चुन सकते हैं।

5 लाख के निवेश पर कितना होगा मुनाफा

- मान लीजिए कि आप पोस्ट ऑफिस की 5 साल की एफडी में निवेश कर रहे हैं। इस एफडी पर मौजूदा समय में 7.5% ब्याज मिल रहा है। अगर आप 5 लाख रुपये 5 साल के लिए निवेश करते हैं तो आपको 5 साल में 2,24,974 ब्याज मिलेगा और कुल मिलाकर 7,24,974 रुपये मिलेंगे।

डेट फंड की खासियत

- डेट फंड म्यूचुअल फंड की ही एक कैटेगरी है। इसमें खासतौर पर फिक्स्ड-इनकम सिक्योरिटीज जैसे सरकारी बॉन्ड, कॉर्पोरेट बॉन्ड, डिबेंचर, कमर्शियल पेपर और ट्रेजरी बिल में निवेश किया जाता है। इसका रिटर्न मार्केट बेस्ड होता है।
- **डायवर्सिफिकेशन:** डेट फंड तमाम तरह के हैं जैसे- लिक्विड फंड, अल्ट्रा-शॉर्ट ड्यूरेशन फंड, शॉर्ट ड्यूरेशन फंड, मीडियम ड्यूरेशन फंड और लॉन्ग ड्यूरेशन फंड, ऐसे में आपको डायवर्सिफिकेशन का मौका मिल जाता है।
- **लिक्विडिटी:** ये एफडी की तुलना में ज़्यादा लिक्विड होते हैं, क्योंकि आप अपनी यूनिट्स को किसी भी वर्किंग डे पर बेच सकते हैं (कुछ फंडों में एग्जिट लोड हो सकता है)।
- **प्रोफेशनल मैनेजमेंट :** फंड मैनेजर आपके पैसे का प्रबंधन करते हैं, जो बाज़ार की स्थितियों के आधार पर निवेश का फैसला लेते हैं।

5 लाख के निवेश पर रिटर्न

- डेट फंड का रिटर्न प्रदर्शन पर आधारित होता है और फ्यूचर में बदल सकता है। औसतन, कई डेट फंडों ने पिछले कुछ साल में 6-9% का रिटर्न दिया है। मान लीजिए आप 5 लाख रुपये 5 साल के लिए इसमें निवेश करते हैं और उस पर 9% का रिटर्न मिल रहा है तो 2,69,311 रुपये ब्याज के तौर पर मिलेंगे। इस तरह आपको कुल 5,00,000+2,69,312 = 7,69,312 रुपये मिलेंगे। हालांकि ये उदाहरण केवल अनुमानित है, वास्तविक रिटर्न फंड के प्रदर्शन पर निर्भर करेगा।

कौन सा विकल्प चुनें?

ये चुनाव आपकी व्यक्तिगत ज़रूरतों पर निर्भर करता है-जैसे जोखिम उठाने की क्षमता, अगर आप बिलकुल भी जोखिम नहीं लेना चाहते और अपनी पूंजी की 100% सुरक्षा चाहते हैं, तो पोस्ट ऑफिस एफडी आपके लिए बेहतर है। अगर आप थोड़ा जोखिम ले सकते हैं और एफडी से ज़्यादा रिटर्न चाहते हैं, तो डेट फंड एक अच्छा विकल्प है।

निवेश की अवधि

छोटी अवधि (3 साल से कम) के लिए, पोस्ट ऑफिस एफडी या शॉर्ट-ड्यूरेशन डेट फंड को देखा जा सकता है. लंबी अवधि (3 साल से ज़्यादा) के लिए, इंडेक्सेशन लाभ के कारण डेट फंड टैक्स के लिहाज से ज़्यादा कुशल और बेहतर रिटर्न दे सकता है।

खबर संक्षेप

इनेलो नेताओं ने रोहतक रैली का दिया निमंत्रण

नारनौल। इंडियन नेशनल लोकदल हलका नांगल चौधरी की टीम ने शनिवार को प्रदेश संगठन सचिव पूर्व विधायक व हलका नांगल चौधरी प्रभारी रणवीर मंदोला के नेतृत्व में गांव रघुनाथपुरा, मकसूसपुर, गहली, हमीदपुर, खटौटी खुर्द, भांखरी, गोद, बलाहा खुर्द, बलाहा कलां, बदोपुर, दोचाना आदि गांव में जनसंपर्क कर 25 सितंबर को रोहतक में पूर्व उप प्रधानमंत्री चौधरी देवीलाल की 112वीं जयंती पर आयोजित होने वाले सम्मान दिवस का निमंत्रण दिया। मंदोला ने कहा कि चौधरी देवीलाल ने पूरी उम्र जनहित के कार्य बिना भेदभाव के किए थे।

सांसद व भाजपा जिलाध्यक्ष कल करेंगे जनसुनवाई

नारनौल। आमजन से सीधा संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर हल करने के लिए भाजपा निरंतर जनसंपर्क व जनसुनवाई कार्यक्रम आयोजित कर रही है। इसी कड़ी में महेंद्रगढ़ भिवानी लोकसभा क्षेत्र के सांसद चौधरी धर्मबीर सिंह व भाजपा महेंद्रगढ़ जिलाध्यक्ष यतेन्द्र राव 15 सितंबर दोपहर दो बजे भाजपा जिला कार्यालय में जनसमस्याएं सुनेंगे। वरिष्ठ पदाधिकारी व जनप्रतिनिधि भी मौजूद रहेंगे, ताकि अधिकतर समस्याओं का समाधान मौके पर ही किया जा सके। यह प्रयास भाजपा की पारदर्शी व उत्तरदायी कार्यप्रणाली का प्रमाण है।

किसानों को 80 प्रतिशत तक मिल रहा अनुदान

किसानों के लिए सरकार बना रही सार्वजनिक व व्यक्तिगत तालाब

- सूखे से समृद्धि की ओर दक्षिणी हरियाणा : जल संरक्षण, ऊर्जा बचत व पर्यावरण संतुलन की मिसाल बने खेत जलघर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नारनौल। खेत जल घर योजना से बने तालाब व तालाब के साथ लगाए गए पंप सेट। फोटो : हरिभूमि

दक्षिणी हरियाणा जो कभी जल संकट से जूझ रहा था, वहां का किसान आज आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाकर एक नई क्रांति की मिसाल पेश कर रहा है। प्रदेश सरकार की खेत जल घर योजना व सूक्ष्म सिंचाई परियोजनाओं ने इस क्षेत्र के किसानों की जिंदगी बदल दी है। जिले के गांव बुडीन व दुलोठ के आसपास के किसानों ने बताया कि अब उन्हें बारिश पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।

दुलोठ के किसान हितेश यादव ने बताया कि सरकारी सब्सिडी से सार्वजनिक व व्यक्तिगत तालाब बनाने के बाद अब किसान सिर्फ परंपरागत तरीकों पर निर्भर नहीं हैं, बल्कि वे ड्रिप व सप्रिंकलर जैसी तकनीकें अपनाकर कम पानी में भी अधिक पैदावार ले रहे हैं। यह बदलाव केवल किसानों की आय तक सीमित नहीं है, बल्कि इसने जल संरक्षण, ऊर्जा बचत और पर्यावरण संतुलन जैसे बड़े लक्ष्यों को भी साधा है। खेत जल घर से किसान सोलर पंपिंग सिस्टम के जरिए अपने खेतों को सींच रहे हैं। सभी किसानों के लिए सिंचाई का समय निर्धारित किया हुआ है। बारी-बारी से किसान अपनी खेती को सींच रहे हैं।

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के तहत माइक्रो इरिगेशन कमांड एरिया डेवलपमेंट अथॉरिटी (मिकाडा) की पहल ने किसानों को एक नई राह दिखाई है। इन तालाबों से किसानों के खेतों तक पाइप लाइनों के जरिए सिंचाई की जा रही है। जेई उत्तम सिंह ने बताया कि पहले किसान पानी की कमी के कारण एक फसल भी मुश्किल से ले पाते थे। जलघर योजना के बाद अब ड्रिप और सप्रिंकलर सिस्टम से 40-60 प्रतिशत तक पानी की बचत हो रही है। इससे न केवल सिंचाई का खर्च कम हुआ है, बल्कि उपज भी बढ़ी है।

खेत जलघर एक टिकाऊ कृषि प्रणाली: सोनित राठी

मिकाडा के एक्सईएन सोनित राठी ने बताया कि हरियाणा सरकार की जल घर योजना सिर्फ किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य नहीं रखती, बल्कि एक टिकाऊ कृषि प्रणाली का निर्माण कर रही हैं। इस तरह की सही नीतियों और आधुनिक तकनीकों के सहारेए सूखे तथा जल संकट जैसी चुनौतियों को भी अवसर में बदला जा सकता है।

सरकार इस तरह दे रही सब्सिडी

ड्रिप व सप्रिंकलर प्रणाली: इस पर 75 प्रतिशत तक की सब्सिडी मिल रही है।

खेत तालाब योजना: सामुदायिक तालाब बनाने के लिए 80 प्रतिशत तक और व्यक्तिगत तालाब के लिए 70 प्रतिशत तक की सब्सिडी दी जा रही है।

सोलर पंप: तीन एचपी से 10 एचपी तक के पंपों पर 75 प्रतिशत तक की सब्सिडी मिल रही है। इससे किसान बिजली व डीजल पर अपनी निर्भरता कम कर रहे हैं।

महेंद्रगढ़। विजेता बच्चों को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

आरपीएस में हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

आरपीएस विद्यालय में हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य पर हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई। विद्यालय के कक्षा नौवीं और दसवीं के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इस दौरान आरपीएस इंटरनेशनल स्कूल कनीना में भी आयोजित आरपीएस अंतर विद्यालय हिन्दी निबंध एवं भाषण प्रतियोगिता में आरपीएस महेंद्रगढ़ से गरिमा ने निबंध में प्रथम स्थान व भाषण प्रतियोगिता में रक्षा ने तृतीय स्थान हासिल कर अपने विद्यालय एवं अभिभावकों का नाम रोशन किया। आरपीएस समूह की चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव, सीईओ इंजी. मनीष राव, डिप्टी सीईओ कुनाल राव, प्राचार्य डॉ. किशोर तिवारी, उप प्राचार्य दिनेश कुमार, डीन एलएन गौड़ ने कहा कि कविता पाठ प्रतियोगिता में देशभक्ति, हिन्दी भाषा का महत्व एवं धार्मिक सहिष्णुता मुख्य विषय रहे। कक्षा दसवीं से गुंजन ने 'संहार झूलता है मुझमें' व कशिश की कविता 'खूब लड़ी मर्दानी थी' ने सभी में वीर रस का संचार किया, वहीं महक ने 'हिन्दी दिवस नहीं एक दिन का, यह है सम्मान की बात' व लिसा की कविता 'हिन्दी से है हिंदुस्तान' ने हिन्दी भाषा का मानव जीवन में महत्व दर्शाया। खुशी की कविता 'जीवन की परिभाषा है हिन्दी' ने खूब तालियां बटोरी।

हिन्दी मन की भाषा

चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव ने कहा कि हिंदी भाषा ही नहीं अपितु भावना है। हिंद यदि शरीर है तो हिन्दी इसके प्राण। सीईओ इंजी. मनीष राव ने कहा कि हिन्दी भाषा हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक है। यह वैज्ञानिक भाषा भी है। प्राचार्य डॉ. किशोर तिवारी ने कहा कि हिन्दी मन की भाषा एवं देश का गौरव है। इस मौके पर चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव, सीईओ इंजी. मनीष राव, डिप्टी सीईओ कुणाल राव, प्राचार्य डॉ. किशोर तिवारी, उपप्राचार्य दिनेश कुमार, डीन एलएन गौड, विंग हैड देवेंद्र पूनिया, जिले सिंह, अमित कुमार, साक्षी मलिक व अनिता अहलावत उपस्थित रहे।

सिंघानिया विवि में काव्य-सम्मेलन आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

अंधेर नगरी चौपट राजा नाटक का मंचन किया

पचेरी बड़ी स्थित सिंघानिया विश्वविद्यालय में हिन्दी दिवस मनाया गया। इस दौरान कवि-सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें देशभर के ख्यातनाम कवि राजपाल यादव गुरुग्राम, डॉ. रमाकांत शर्मा भिवानी, प्रवेंद्र पंडित अलवर, डॉ. पूजा गंगानिया नोएडा तथा शुभ्रा पालीवाल दिल्ली-एनसीआर ने अपनी ओजस्वी रचनाओं से श्रोताओं को भावविभोर किया। इस दौरान काव्य पाठ, निबंध लेखन, पोस्टर मेकिंग तथा वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। विद्यार्थियों ने अंधेर नगरी चौपट राजा नाटक का मंचन कर सामाजिक व्यंग्य और हास्य का सुंदर मिश्रण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय

नारनौल। अतिथि को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

प्रेसीडेंट व सेवानिवृत आईएएस डॉ. मनोज कुमार ने की।

उन्होंने हिन्दी दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि सिंघानिया विश्वविद्यालय निरंतर तरक्की के पथ पर अग्रसर है। यहां उत्कृष्ट सुविधाएं और समर्पित स्टाफ उपलब्ध है, जिसके कारण विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो रहा है। शिक्षाविद् एवं साहित्यकार तथा विश्वविद्यालय के ऑनरेरी डीन डॉ. रामनिवास मानव ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। मंच संचालन हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. आरती रानी प्रजापति ने किया। कार्यक्रम के समापन पर प्रो-प्रेसीडेंट एवं कैंपस डायरेक्टर प्रो. डॉ. पीएस जस्सल ने सभी कवियों, प्रतिभागियों एवं आगंतुकों का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर प्रो-प्रेसीडेंट एवं मुख्य वित्त अधिकारी सुनील कुमार सोबती, रजिस्ट्रार मोहम्मद इमरान हाशमी, प्रो-प्रेसीडेंट डॉ. पवन कुमार त्रिपाठी, डीन ऑफ रिसर्च डॉ. सुमेर सिंह, डीन ऑफ मैनिटीज धर्मपाल सिंह, डीन ऑफ मैनेजमेंट डॉ. आलोक कुमार, डीन ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी डॉ. अरविंद कुमार, ओएसडी संजीव ग्रोवर, संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. सुमित शर्मा तथा सहायक प्राध्यापक अलका यादव, कानून विभाग से साहिल कुमार, वाणिज्य विभाग से डॉ. साक्षी सोनेजा, गणित विभाग से मीना नैन, मनोविज्ञान विभाग से डॉ. रूकमणी राधास्वामी, वाणिज्य विभाग से ज्योति रानी उपस्थित रहे।

हैप्पी स्कूल में शिक्षक प्रशिक्षण शिविर आयोजित

अध्यापकों ने सीखी प्रभावी शिक्षण रणनीतियां

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

हैप्पी एवरग्रीन सीनियर सेकेंडरी स्कूल में एक दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इस विशेष प्रशिक्षण शिविर में विद्यालय के सभी अध्यापक और अध्यापिकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने के गुर सिखाए गए।

विशेष रूप से इस बात पर जोर दिया गया कि बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास के लिए किस प्रकार की रचनात्मक गतिविधियां आयोजित की जानी चाहिए। मुख्य प्रवक्ता पूजा यादव ने इफेक्टिव टीचिंग स्ट्रेट

महेंद्रगढ़। शिविर में अध्यापकों को संबोधित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

विषय पर अपने विचार रखते हुए शिक्षकों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार एक विद्यार्थी को कक्षा कक्ष में सक्रिय और व्यस्त रखा जा सकता है तथा उससे रचनात्मक गतिविधियां करवाई जा सकती हैं। साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि बच्चों को सोशल मीडिया और आधुनिक तकनीकी उपकरणों का सही प्रयोग सिखाना समय की आवश्यकता है। उन्होंने शिक्षकों को यह समझाया कि विद्यार्थियों को इन संसाधनों के सकारात्मक उपयोग के लिए प्रेरित किया जाए और उन्हें नकारात्मक प्रयोग से बचाने के लिए जागरूक किया जाए।

स्वागत एवं अभिनंदन

विद्यालय की ओर से संचालक सुभाषचंद्र अग्रवाल, उपसंचालिका कौशल्या अग्रवाल, प्रबंध निदेशक मनीष अग्रवाल, मैनेजर चंचल अग्रवाल और प्राचार्य डॉ. जेएस कुंतल ने मुख्य प्रवक्ता पूजा यादव का स्वागत एवं अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि उनका बहुमूल्य समय और मार्गदर्शन शिक्षकों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा। कार्यक्रम का मंच संचालन अंग्रेजी अध्यापक म्युरिश शर्मा और आरजू यादव ने किया।

जिले के 11 गांवों में स्थापित होंगे हेल्थ सब सेंटर: आरती

नारनौल। हरियाणा की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने कहा कि प्रदेश सरकार स्वास्थ्य सेवाओं को गांव-गांव तक पहुंचाने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। इसी दिशा में जिले के 11 गांवों में

हेल्थ सब सेंटर स्थापित किए जाएंगे। इन सब सेंटरों के निर्माण के लिए लगभग छह करोड़ 10 लाख 50 हजार रुपये का बजट स्वीकृत किया गया है। स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि प्रत्येक हेल्थ सब सेंटर पर लगभग 55.50 लाख रुपये की लागत व्यय होगी। इन स्वास्थ्य केन्द्रों के स्थापित होने से ग्रामीण अंचल के नागरिकों को उनके नजदीक ही गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ होंगी और उन्हें आवश्यक चिकित्सा सुविधाओं के लिए शहरों की ओर नहीं जाना पड़ेगा।

तीसरे दिन मुकाबले में 225 बाउट हुए सम्पन्न

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कनीना

सीबीएसई बॉक्सिंग चैम्पियनशिप

कनीना। प्रतियोगिता के तहत रिंग में प्रतिभा का प्रदर्शन करते बॉक्सर।

गांव ककराला स्थित एसडी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय ककराला में आयोजित की जा रही चार दिवसीय सीबीएसई नेशनल बॉक्सिंग चैंपियनशिप प्रतियोगिता के तीसरे दिन खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। विद्यालय के चेयरमैन जगदेव यादव ने बताया कि 17 आयु वर्ग के लड़कों में 44 से 46 किलोग्राम भार वर्ग में नोर्थ जोन दो बी के यश कुमार, सैन्ट्रल जोन बी से ओम बीस्ट, सैन्ट्रल जोन ए से नमन कौशिक, फ्राईस्ट जोन से राजवीर सुबा, 46 से 48 किलोभार वर्ग नोर्थ जोन दो बी के आर्यन, फ्राईस्ट जोन बी फहीम नवाज ईकबाल, सैन्ट्रल जोन ए से अभय प्रताप सिंह, सैन्ट्रल जोन एक बी देवेश पीआर, साउथ जोन दो ए अमन कुमार, ईस्ट जोन ए से विवेक केसरवानी, नोर्थ जोन एक ए से प्रतिक टूकाराम सोनवाने, फ्राईस्ट जोन ए यारागुन्तला ईश्वर, 50 से 52 किलोभार वर्ग नोर्थ जोन दो ए से विशाल, साउथ जोन से एक बी से मागेश, ईस्ट जोन ए से अप्रित चौधरी, सैन्ट्रल जोन ए मिलन, सैन्ट्रल जोन बी कुनाल करण, नोर्थ जोन एक बी पंकज नेगी, नोथ जोन एक ए से मोहित भण्डारी, फ्राईस्ट जोन गौरंग धिहींगिया, सैन्ट्रल जोन से बी संजय, नोर्थ जोन एक ए अकाश राजपूत, नोर्थ जोन दो ए से मयंक नरवाल, नोर्थ जोन दो बी से सचिन जैयानी, 57 से 60 किलोभार वर्ग में फ्राईस्ट जोन बी से फुनगंजा बसुमट्री, साऊथ जोन एक बी से लोगेन्द्रनाथन, सैन्ट्रल जोन से वंशए नोर्थ जोन दो बी से अर्जून मल्लप्पा, नोर्थ जोन से कुनाल, नोर्थ एक बी से अदित्या, ईस्ट जोन बी से प्रियांशु सिंह, साउथ जोन से धनुष, 66 से 70 किलोभार वर्ग से नोर्थ जोन दो बी नितिन ने विजय प्राप्त की। उत्तराखण्ड नैनिताल हल्द्वानी से योगेश कुमार कोच बताया कि

निर्णयों की तारिफ

तमिलनाडु से आई महिला कोच सुनीता ने रिंग में चल रही बाउट के दौरान भेदभाव रहित निर्णयों की तारिफ की। जयपुर से आई मूदरीकामून्द महिला बॉक्सर खिलाड़ी ने बताया कि रिंग में चल रही प्रतियोगिता में सभी निर्णय उचित लिए जा रहे है। दिल्ली सैन्ट मार्टिन नेशनल स्कूल से हिमांशी गुप्ता ने कहा कि एक खिलाड़ी के लिए इस तरह की भेदभाव रहित व्यवस्था बहुत ही महत्वपूर्ण है। इससे खिलाड़ी में नई उमंग व नए विश्वास के साथ मुकाबला लड़ने में बड़ी मदद मिलती है।

एसडी विद्यालय ने की प्रबंधन व्यवस्था बहुत अव्वल दर्जे की है। वे हल्द्वानी से चले तब सोच रहे थे कि हमें जाने में कितनी परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

आधारशीला स्कूल के विद्यार्थियों ने किया बाढ़ पीड़ित के लिए चंदा एकत्रित

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नारनौल। पंजाब बाढ़ पीड़ितों के लिए चंदा एकत्रित करते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

आधारशीला विद्यापीठ हाई स्कूल हुडीना के छठी से 10वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने शहर की मार्केट में दुकानदारों से पंजाब व हरियाणा में बाढ़ पीड़ित सहायता हेतु चंदा इकट्ठा करने की मुहिम चलाई। इस मुहिम में बच्चों ने महावीर चौक से लेकर आजाद चौक तक दुकानदारों व हीरो होंडा चौक से लेकर रेवाड़ी रोड पर गोशाला रोड तक के दुकानदारों, कोर्ट परिसर में जाकर अधिवक्ताओं से दान राशि एकत्रित की। इस अभियान में मुख्यतः 10वीं के हरजस, जतिन,मयंक व जिज्ञांश, छठी से आठवीं कक्षा के आकृति, इशिका, विनय, अंश, खुशी, विशाल, कपिल, विवेक, हिमांशु ने दान एकत्रित करने के लिए अपना योगदान दिया। विद्यालय के चेयरमैन गिरीश ने समस्त दानकर्ताओं के जज्बे को सलाम करते हुए कहा कि मानवता हेतु यह प्रयास सबका सांझा है, सभी बच्चे सौभाग्यशाली है कि समस्त दानकर्ताओं के पुण्य को आगे पहुंचाने के माध्यम बने। आज के दिन प्रयास से बच्चों ने दान लगभग 28000 रुपये नकद एकत्रित किए। इस पुण्य काम कार्य में स्कूल स्टाफ कनिका, संजय सैनी, सचिन सैनी, राजेश कुमार व रिंकू सैनी का विशेष योगदान रहा। गिरीश खेड़ा ने बताया कि यह मुहिम सोमवार तक चलाई जाएगी। इसके बाद हरियाणा व पंजाब मुख्यमंत्री रिलीफ फंड में जमा करवा दिया जाएगा।

टैगोर स्कूल को मिला बेस्ट डिफेंडर का खिताब

सीबीएसई नेशनल बास्केटबॉल चैंपियनशिप छत्तीसगढ़ व उदयपुर की टीम का रहा दबदबा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। विजेता टीम को सम्मानित करते हुए। फोटो : हरिभूमि

टैगोर सीनियर सेकेंडरी स्कूल के तत्वावधान में आयोजित सीबीएसई नेशनल बास्केटबॉल चैंपियनशिप (गर्ल्स) का समापन रोमांचक मुकाबलों के बीच हुआ।

अंडर-19 वर्ग के पहले सेमीफाइनल में बाल भारती स्कूल दिल्ली ने मिलेनियम इंटरनेशनल स्कूल पुणे को हराया। दूसरे सेमीफाइनल में डॉ. जेबी सिंह स्कूल, राजनांदगांव छत्तीसगढ़ ने सेंट एडमंड स्कूल जयपुर को मात दी। खिताबी मुकाबले में डॉ. जेबी सिंह स्कूल राजनांदगांव ने बेहतरीन खेल दिखाते हुए बाल भारती स्कूल, दिल्ली को पराजित किया और गोल्ड मेडल अपने नाम किया। इस वर्ग में मेजबान टैगोर सीनियर सेकेंडरी स्कूल की टीम को बेस्ट डिफेंडर अवार्ड से सम्मानित किया गया, जिसने पूरे टूर्नामेंट में शानदार रक्षात्मक खेल का प्रदर्शन किया। अंडर-17 वर्ग में पहले सेमीफाइनल में गुरु नानक पब्लिक स्कूल चंडीगढ़ ने गीतांजलि स्कूल सोनीपत को हराया, जबकि दूसरे सेमीफाइनल में डीपीएस राजनांदगांव छत्तीसगढ़ ने एपेक्स स्कूल दिल्ली को मात दी। फाइनल में डीपीएस राजनांदगांव ने शानदार प्रदर्शन करते हुए गुरु नानक पब्लिक स्कूल चंडीगढ़ को हराकर गोल्ड मेडल हासिल किया।

अंडर-14 वर्ग के पहले सेमीफाइनल में सैकरेड हार्ट स्कूल चंडीगढ़ ने माउंट कार्मेल स्कूल दिल्ली को हराया, जबकि दूसरे सेमीफाइनल में सेंट मैरी कॉन्वेंट स्कूल उदयपुर ने दा शिशुकुंज इंटरनेशनल स्कूल मध्य प्रदेश को हराकर फाइनल में प्रवेश किया। निर्णायक मुकाबले में सेंट मैरी कॉन्वेंट स्कूल उदयपुर ने दमदार खेल दिखाते हुए सैकरेड हार्ट स्कूल चंडीगढ़ को हराया और गोल्ड मेडल जीत लिया।

समापन अवसर पर डॉ. बीएल यादव ने कहा कि खेल केवल जीत और हार का नाम नहीं हैं, बल्कि यह जीवन जीने की कला सिखाते हैं। खिलाड़ी मैदान पर चाहे विजयी हो या पराजित, दोनों ही स्थितियों में वह अनुशासन, संयम और आत्मविश्वास की सीख लेकर बाहर आता है।

यदुवंशी कॉलेज में हिन्दी दिवस मनाया

नारनौल। यदुवंशी डिग्री कॉलेज में हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा स्तर पर सम्मानित करवाने के लिए नई शिक्षा नीति 2020 हिन्दी के प्रचार प्रसार की संभावनाएं व नई शिक्षा नीति 2020 हिन्दी भाषा के संरक्षण की दिशा में कदम विषय पर निबंध प्रतियोगिता, कवि सम्मेलन, संगोष्ठी, हास्य युक्त कलाकृतियों का आयोजन किया गया। प्राचार्य बजरंग लाल ने कहा कि हिन्दी भाषा हमारी एकता का प्रतीक है, इसलिए हमें अपनी भाषा को राष्ट्रभाषा में परिवर्तित करना चाहिए। उप प्राचार्या सोनल यादव ने कहा कि प्रत्येक गांव, शहर और नगर में हिन्दी से संबंधित स्लोगन व संगोष्ठियों और नुक्कड़ नाटकों की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिए, जिससे हिन्दी भाषा मजबूत बने। चेयरमैन राव बहादुर सिंह ने हिन्दी दिवस पर जागृति संदेश दिया कि हमें नहीं भूलना चाहिए कि मुगल आए या आए गोरे, सबको मार भगाया था, सारा भारत जब आपस में हिन्दी से जुड़ पाया था।

जजपा की नवगठित कार्यकारिणी का अभिनंदन कर जनसंपर्क की बनाई रूपरेखा

नांगल चौधरी। कोटपूतली रोड पर स्थित जेजेपी कार्यालय में नवगठित कार्यकारिणी का हलका प्रधान एडवोकेट प्रमोद ताखर व प्रभारी विनोद भील की अगुवाई में अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में पार्टी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अभिमन्यू राव व प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य हजारीलाल लंबोरा मुख्य रूप से मौजूद रहे। इस दौरान बढ़ती बेरोजगारी और महंगाई पर चिंता व्यक्त की गई तथा गांव वाइज जनसंपर्क करके संगठन को मजबूत करने की रूपरेखा बनाई गई। उन्होंने बताया कि पूर्व उप प्रधानमंत्री चौ. देवीलाल के सिद्धातों पर गठित जेजेपी में निष्ठावान कार्यकर्ताओं को बड़ी जिम्मेवारी सौंपने की परंपरा है। उनका तर्क था कि कार्यकर्ता ही राजनीतिक पार्टी की रीढ़ होते हैं, जिनके परिश्रम से सत्ता तक पहुंचना संभव है। दक्षिण हरियाणा से पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला का विशेष लगाव रहा था तथा जजपा सुप्रीमो डॉ. अजय चौटाला ने ने नांगल चौधरी हलके से राजनीतिक करियर शुरू किया था। उन्होंने रायमलिकपुर से चंडीगढ़ तक पैदल यात्रा करके क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं को विधानसभा तक पहुंचाया था। विधानसभा चुनावों में जजपा ने एक भी सीट नहीं जीती बावजूद पार्टी के हौसले बुलंद हैं।

खबर संक्षेप

नप सफाई कर्मचारियों की हड़ताल खत्म

नारनौल। नगर पालिका कर्मचारी संघ इकाई ने अपनी मांगों को लेकर दूसरे दिन काम छोड़ हड़ताल की। वहीं शनिवार को नप प्रशासन व सफाई कर्मचारियों के बीच वार्ता हुई। जिसमें ईओ शुशील, अकाउंटेंट उमेश कुमार, जेई प्रवीण खटक, विकास जेई, कर्मचारी यूनियन के प्रधान सुरेश कुमार जैदिया व कर्मचारी मौजूद रहे। नप ईओ ने आश्वासन दिया कि 10 से 15 दिन के अंदर बकाया एरियर का भुगतान कर दिया जाएगा।

अधिक ब्याज वसूलने वाले सूदखोरों की अब खैर नहीं, दो पर केस

एसपी ने थाना प्रभारियों को सूदखोरों की पहचान कर गतिविधियों पर नजर रखने के निर्देश दिए

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

पुलिस ने अवैध रूप से ऊंचे ब्याज पर पैसे देकर लोगों को परेशान करने वाले सूदखोरों के खिलाफ बड़ा अभियान चलाया हुआ है। इसी कड़ी में थाना शहर व थाना सदर में दो शिकायतें मिलने के बाद दो अलग-अलग लोगों के खिलाफ मामले दर्ज किए गए हैं।

पुलिस की टीमों ने सूदखोरों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए कई जगहों पर छापेमारी भी की है। पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ ने बताया कि ऐसे मामले अक्सर सामने आते हैं। जहां ये सूदखोर जरूरतमंद व गरीब लोगों को कर्ज देकर उन्हें महंगे ब्याज के जाल में फंसा लेते हैं। जब पीड़ित समय पर पैसा नहीं चुका पाते, तो ये लोग उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित करते हैं। जिससे कई बार पीड़ित आत्महत्या जैसा कदम उठाने पर मजबूर हो जाते हैं। पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ ने साफ किया कि जिले में अवैध तरीके से ऊंचे ब्याज पर कर्ज देकर लोगों का शोषण बिल्कुल बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने सभी थाना प्रभारियों को ऐसे सूदखोरों की पहचान कर उनकी गतिविधियों पर कड़ी नजर रखने और उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का निर्देश दिए हुए हैं।

उन्होंने आम जनता से अपील की है कि अगर कोई भी व्यक्ति ऐसे सूदखोरों से परेशान है, तो तुरंत पुलिस को इसकी जानकारी दें। आपकी शिकायत पर तुरंत कानूनी कार्रवाई की जाएगी, ताकि इन लोगों को प्रताड़ना से बचाया जा सकें। एसपी ने सूदखोरों को चेतावनी दी है कि शिकायत मिलने पर उनके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

शिकायत पर पुलिस एक्शन में

शिकायत नंबर एक : महेंद्रगढ़ शहर वासी व्यक्ति जोकि 12वीं पास ह और बीडीएस में दाखिले की तैयारी कर रहा है। उसे मार्च माह में अचानक कुछ रुपयों की जरूरत पड़ गई। किसी ने उस वक्त बताया कि एक गांव का नामजद व्यक्ति ब्याज पर रुपये देता है। वह उसके गांव गया और पैसे उधार की मांग की। उसने कहा वह रुपये के बदले खाली चैक लेगा और खाली परनोट पर साइन करवाएंगा। पैसा वापस मिलने पर चैक व खाली परनोट वापस कर देगा। इसके घटनाक्रम के बाद 25 मार्च 2025 को राहुल से 15 हजार रुपये उधार लिए थे। आरोपित ने इन रुपयों का ब्याज 15 प्रतिशत लगाया था और बैंक के खाली चैक पर हस्ताक्षर करवाकर खुद के पास रख लिया। उसके बाद एक अप्रैल को 10 हजार, पांच अप्रैल को 10 हजार, 15 अगस्त को आठ हजार रुपये कुल 43 हजार ब्याज पर उधार लिए थे। आरोप है कि आरोपित को शिकायतकर्ता ने फोन से अलग अलग किस्तों में 52 हजार 500 रुपये दे चुका है लेकिन आरोपित कहता है कि आपकी तरफ रुपयों की पैलेंटी लगाकर कुल 60 हजार ओर है। अब वह उसे व पिता को बार बार फोन कर दबाव देकर ब्याज के 60 हजार रुपये ओर देने के लिए कहता है। कई बार शिकायतकर्ता ने आरोपित से कहा कि वह आपको 11 हजार रपये ब्याज के आपकी रकम से अधिक दे चुका है। सात सितम्बर को आरोपित ने शिकायतकर्मा को नामजद फोन से धमकी दी हैं कि या तो 60 हजार ब्याज के दें, वरना उसे व उसके पिता को देख लेगा। खाली चैक में दो लाख रुपये भरकर आदालत में लगाएगा। आरोपित के खिलाफ कार्रवाई हो। महेंद्रगढ़ पुलिस ने इस संबंध में एक नामजद के खिलाफ बीएनएस की धारा 308 (2),351 (3) के तहत केस दर्ज किया है।

शिकायत नंबर दो

दूसरा केस भी महेंद्रगढ़ शहर से जुड़ा है। पेशे से गाड़ियों में मिस्त्री का कार्य करने व्यक्ति को बच्चों की फीस बरनी थी। उसने पास के गांव वासी एक व्यक्ति से उधार देने के लिए बोला तो उसने रुपये ब्याज पर देने का कहा। छह रुपये प्रति सैकड़ा महीने के हिसाब के लिए बैंक काउंट का चैक दे दिया। जिस पर आरोपित ने कहा कि चैक पर साइन करने के लिए रकम भर देते है। फिर उसने बोला साइन करो, नकद रकम बाद में भरेंगे। वह अपनी किस्त का भुगतान करता रहा। कुछ नगद कुछ फोन पे के माध्यम से भुगतान किया।कुल आठ हजार रुपये वापिस दे दिए जो ब्याज सहित 10 हजार रुपये बकाया है। आरोपित कई दिनों तक किस्त लेने नहीं आया। बाद में पता चला कि आरोपित ने धोखा करके चैक में दो लाख रुपये भरकर कोर्ट में केस डाल दिया। नोटिस भी मिल गया। आरोप है कि आरोपित खाली चैक में झूठे दो लाख रुपये भरकर उस पर दबाव बना रहा है। वह मजदूरी करके बच्चों का पालन करता है। पुलिस ने आरोपित के खिलाफ धारा 308 (2),318 (4) के तहत केस दर्ज किया है।

नांगल चौधरी हलके की 352.19 करोड़ की पेयजल परियोजना का टेंडर जारी

पहाड़ी क्षेत्र व सुदूर स्थित गांवों की पेयजल समस्या का होगा दूरगामी स्थायी समाधान

प्रतिवर्ष गर्मियों के समय में नांगल चौधरी हलके के अधिकांश गांवों में पीने के पानी की कमी महसूस की जाती है।

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

प्रदेश की भाजपा सरकार ने नांगल चौधरी के सुदूर स्थित गांवों में पीने के पानी की कमी को पूरा करने के लिए गत वर्ष मंजूर की गई एक महत्वाकांक्षी योजना पर काम प्रारंभ करने के लिए टेंडर जारी किया है, जो इस क्षेत्र के पीने के पानी की आवश्यकता अगले कई वर्षों तक पूरा करेगी। पूर्व सिंचाई मंत्री डॉ. अभय सिंह यादव ने इसकी विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि उनके 10 वर्ष के कार्यकाल में उनका यह प्रयास रहा कि नांगल चौधरी हलके को विकास के एक आदर्श मॉडल के रूप में विकसित किया जाए, लेकिन अनेक महत्वपूर्ण परियोजनाएं विकसित करने के बावजूद इसमें सबसे बड़ी बाधा विशेषकर सीमावर्ती व पहाड़ी क्षेत्र में स्थित गांवों में पेयजल की कमी रही है।

प्रतिवर्ष विशेषतः गर्मियों के समय में नांगल चौधरी हलके के अधिकांश गांवों में पीने के पानी की कमी महसूस की जाती है। भरसक प्रयास करने के उपरांत भी वर्तमान जल व्यवस्था में सुधार नहीं हो पाया। अब पटरी पर लाया जाएगा।

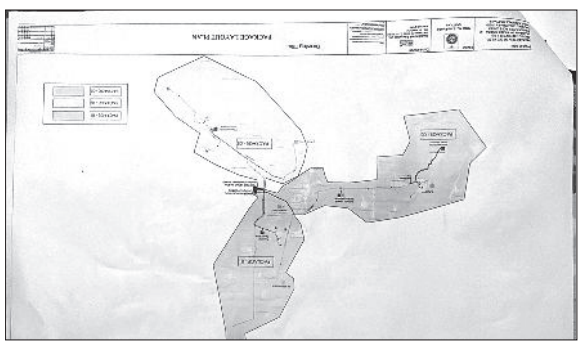

नारनौल। प्रोजेक्ट का नक्शा। फोटो : हरिभूमि

नांगल चौधरी में तैयार होंगे जल संयंत्र

वर्तमान में पूरे नांगल चौधरी व नारनौल हलके के अधिकांश गांवों में लहरोदा जल संयंत्र से पानी सप्लाई किया जाता है। बढ़ती हुई जनसंख्या एवं बढ़ती हुई मांग के अनुरूप यहां की भंडारण क्षमता पानी की आपूर्ति करने के लिए पर्याप्त नहीं है। नांगल चौधरी हलके की दूरी के कारण वहां पानी की आपूर्ति पर्याप्त रूप से नहीं हो पा रही थी। इसलिए सरकार को नांगल चौधरी हलके के लिए एक अलग जल व्यवस्था करने का प्रस्ताव अप्रैल 2024 में भिजवाया गया तथा सितम्बर 2024 में इसे सरकार की मंजूरी मिल गई थी। इस नई परियोजना के मूल में यह बात है कि लहरोदा से संशोधित जल की सप्लाई की बजाय नहरी पानी अलग-अलग जगह जल संयंत्रों के माध्यम से साफ करके अलग-अलग ग्राम समूहों के लिए अलग से जलघर बनाकर वहां से गांवों में पानी की सप्लाई की जाए। इस कड़ी में नांगल चौधरी नगर पालिका क्षेत्र समेत चार नए जल संयंत्र स्थापित किए जाएंगे, जो सिरोही बहाली, आसरावास, मोहनपुर व मूसनोता में स्थापित किए जाएंगे। इसके साथ ही नागल दर्गु जल भंडार की क्षमता भी बढ़ाई जाएगी। इन समस्त जल भंडारों को नहरी पानी की आपूर्ति के लिए नारनौल के पास सुराना गांव के पास अटेली डिस्ट्रीब्यूटरी से लोहे की पाइप लाइन से ले जाया जाएगा। यद्यपि नांगल चौधरी क्षेत्र के इन गांवों में नहर उपलब्ध है, लेकिन वहां पानी की सप्लाई उपलब्धता सीमित अवधि के लिए होती है। अतः पानी की पर्याप्त सप्लाई सुनिश्चित करने के लिए नारनौल से पानी ले जाने का प्रावधान किया गया है।

तीन वर्ष में पूरी होगी योजना: डॉ. अभय सिंह

डॉ. अभय सिंह यादव, पूर्व मंत्री।

नांगल चौधरी नगर पालिका क्षेत्र के लिए मोहनपुर गांव में अलग से जलघर का निर्माण किया जाएगा, जो शहरी योजना के अंतर्गत बनाया जाएगा। इस जलघर से नांगल चौधरी शहर व नगर पालिका क्षेत्र में सम्मलित सभी गांवों व ढाणियों को पेयजल की सप्लाई की जाएगी। यह परियोजना आगामी तीन वर्षों की अवधि में पूरी किए जाने की संभावना है। यह भविष्य की आवश्यकताओं को देखते हुए बनाई गई है तथा यह प्रयास किया गया है के सुदूर ऊंचाई पर स्थित गांवों में भी पर्याप्त मात्रा में पीने के पानी की व्यवस्था की जाए। इसका दूसरा लाभ यह होगा कि लहरोदा जल भंडार से इन 39 गांवों की सप्लाई हटने के बाद नांगल चौधरी व नारनौल हलके के शेष गांवों में लहरोदा जलघर से ही पर्याप्त मात्रा में पेयजल उपलब्ध होगा। उन्होंने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी व जन स्वास्थ्य मंत्री रणबीर गंगुआ का धन्यवाद करते हुए कहा कि सरकार के पिछले कार्यकाल में मंजूर की गई इस योजना को मुख्यमंत्री ने धरती पर लाने के लिए गंभीरता से आगे बढ़ाया है।

नया लिफ्टिंग स्टेशन बनाया जाएगा

⇨**प्रथम पैकेज:** सुराना गांव के पास अटेली डिस्ट्रीब्यूटरी से नहरी पानी के उठान के लिए नया लिफ्टिंग स्टेशन बनाया जाएगा। यहां से कच्चा पानी लोहे की पाइप लाइन के माध्यम से सिरोही बहाली गांव के जल घर तक पहुंचाया जाएगा। जिसमें विभिन्न आकार की पाइप लाइन की कुल लम्बाई लगभग 24.39 किलोमीटर होगी। गांव सिरोही बहाली में 6.0 एमएलडी (185694000 लीटर) क्षमता वाले दो एस एंड एस टैंकों का निर्माण किया जाएगा। इस जलघर का मुख्य उद्देश्य 16 गांवों में सुचारू रूप से जलापूर्ति करना है। जिनमें भुंगारका, शिमली, इकबालपुर नंगली, नेहरु नगर, सिरोही बहाली, नांगल कालिया, अकबरपुर, आकोली, मुलोदी, स्योरामनाथपुरा, भोजावास, तोताहेड़ी, चेक मलिकपुर, कालबा, बामनवास खेता व नायन गांव शामिल हैं।

⇨**द्वितीय पैकेज:** नांगल चौधरी में स्थित नहरी पानी के दूसरे लिफ्टिंग स्टेशन से 13.385 किलोमीटर लंबी जलापूर्ति पाइप लाइन से नहरी पानी की मुख्य लाइन बिछाना और गांव आसरावास में नए जलघर का निर्माण कार्य शामिल होगा। गांव आसरावास में 5.0 एमएलडी (156100000 लीटर) क्षमता वाले दो एस एंड एस टैंक वाले इस जलघर का मुख्य उद्देश्य 13 गांवों में सुचारू रूप से जलापूर्ति प्रदान करना है। जिनमें नांगल नूनियां, दताल, बनिहाड़ी, आसरावास, मौरूंड, नियामतपुर, गोठड़ी, थनवास, नांगल सोडा, अमरपुरा, बूढ़वाल व रायमलिकपुर शामिल है। यह सभी गांव वर्तमान जल वितरण प्रणाली की टेल पर स्थित होने के कारण वहां पानी की पूरी आपूर्ति नहीं हो पा रही है। पानी की पूरी सप्लाई लगातार उपलब्ध रहे यह सुनिश्चित करने के लिए इसे भी नारनौल से आने वाली लाइन से जोड़ा जाएगा, ताकि इस जलघर में नहरी पानी की कमी न रहे।

⇨**तृतीय पैकेज:** नांगल चौधरी स्थित नहरी पानी के दूसरे लिफ्टिंग स्टेशन से ही मूसनोता और नांगल दर्गू जल संयंत्रों तक नहरी पानी की मुख्य लाइन बिछाना तथा मूसनोता गांव में ढाणी रावता के पास नए जलघर का निर्माण कार्य एवं नांगल दर्गू में मौजूदा जलघर का विस्तारीकरण भी शामिल होगा। गांव मूसनोता में 3.50 एमएलडी (100100000 लीटर) क्षमता के दो टैंकों का निर्माण भी इसमें शामिल हैं। इस जलघर का मुख्य उद्देश्य मूसनोता, पांचनौता, बायल, ढाणी रावता, बखरीजा, मेघोत हाला, मेघोत बिंजा, गंगुताना, गोलवा, नांगल दर्गू गांव में जलापूर्ति प्रदान करना है। इन गांवों में विशेषकर ऊंचाई पर स्थित बायल, ढाणी रावता, गोलवा, मूसनोता और पांचनौता के ऊंचाई पर स्थित रिहायशी इलाकों में पूरा पानी पहुंचाने के लिए, इस क्षेत्र के लिए जलघर का निर्माण भी ऊंचाई वाली भूमि पर ही किया जा रहा है, ताकि पेयजल की सप्लाई में भी सुगमता रहे और पर्याप्त पानी बिना लिफ्टिंग के पहुंच सके।

हकेंवि ने ग्रीन अर्थ संगठन के साथ किया एमओयू

महेंद्रगढ़। समझौता ज्ञापन हस्तांतरित करते कुलपति प्रो. टंकेशवर कुमार व ग्रीन अर्थ के निदेशक डॉ. नरेश कुमार भारद्वाज। फोटो : हरिभूमि

- शून्य अपशिष्ट परिसर एवं सतत विकास की दिशा में महत्वपूर्ण पहल

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय ने पर्यावरण संरक्षण, सार्वजनिक स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं स्वच्छता जैसे प्रमुख क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ग्रीन अर्थ-ऑर्गेनाइजेशन फॉर एनवायरनमेंट, हेल्थ, सेफ्टी एंड सैनिटेशन के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। यह समझौता दोनों संस्थानों के बीच सार्थक सहयोग की शुरुआत है, जो शून्य अपशिष्ट परिसर के निर्माण, विद्यार्थियों के प्रशिक्षण एवं सामुदायिक जागरूकता गतिविधियों जैसे प्रभावशाली उपक्रम के लिए आधार तैयार करेगा। यह पहल हकेंवि की सतत विकास और सामाजिक कल्याण के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाती है। विवि कुलपति प्रो. टंकेशवर कुमार ने कहा कि ऐसे सहयोग शैक्षणिक ज्ञान को वास्तविक जीवन में लागू करने का अवसर प्रदान करते हैं। यह समझौता पर्यावरण, स्वास्थ्य और स्वच्छता से संबंधित महत्वपूर्ण चुनौतियों के समाधान के लिए नवाचार और सहयोग को मजबूत करेगा।

उन्होंने कहा कि यह हकेंवि के उस दृष्टिकोण को भी प्रतिबिंबित करता है जिसके तहत विश्वविद्यालय समाज के कल्याण में शैक्षणिक उत्कृष्टता एवं व्यावहारिक सहभागिता के माध्यम से योगदान देना चाहता है। विश्वविद्यालय समकुलपति प्रो. पवन कुमार शर्मा ने इस सहयोग को समयानुकूल एवं रणनीतिक कदम बताते हुए कहा कि यह अंतःविषयक सहयोग को बढ़ावा देने और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में ठोस परिवर्तन लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

ये रहे मौजूद

कुलसचिव प्रो. सुनील कुमार, आईक्यूएसी निदेशक प्रो. सुरेंद्र सिंह, ग्रीन अर्थ की कार्यकारिणी सदस्य डॉ. मोनिका भारद्वाज, समकुलपति प्रो. पवन कुमार शर्मा, कुलसचिव प्रो. सुनील कुमार, पर्यावरण अध्ययन विभाग की प्रोफेसर मोना शर्मा, निदेशक, आईक्यूएसी प्रो. सुरेंद्र सिंह, शोध अधिष्ठाता प्रो. नीलम सांगवान, पोषण जीवविज्ञान विभाग के प्रोफेसर कांति प्रकाश शर्मा उपस्थित रहे।

जोहड़ का पानी घरों की तरफ छोड़ा जा रहा, फसल हुई खराब

- पीड़ित पक्ष ने मुख्यमंत्री सहित, स्थानीय नेता व अधिकारियों को भेजी शिकायत

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

शहरी क्षेत्र में शामिल ढाणी किरारोद में एक काम सही कर दूसरा काम बिगाड़ा जा रहा है। एक जोहड़ का पानी निकालकर मकानों की तरफ छोड़ा जा रहा है। हालात यह है कि खेतों के साथ साथ मकानों में भी नुकसान होने लगा है। फसल खराब हो गई है। पीड़ित ने न्याय दिलाने की मांग की है।

शिकायतकर्ता मदनलाल ने बताया कि नगर परिषद के वार्ड नंबर एक किरारोद अफगान में है। यहां जोहड़ का पानी निकालने के लिए जोहड़ पर मोटर लगाई हुई है। जिसका पानी हमारे घरों के पीछे दो तीन महीनों से छोड़ा जा रहा है। जिससे यह पानी मकानों की नींव में रिस–रिस कर जा रहा है। इसकी वजह से एक टॉयलेट की कुई रोड के साथ में धंस गई थी। जिसमें कोई भी बड़ा हादसो हो सकता है लेकिन नगर परिषद कार्यालय में काफी शिकायतों के बाद उसे नहीं भरवाया गया। हमने निजी तौर पर भरवाया। वर्तमान में इस पानी की वजह से पानी के कुएं में पानी का लेवल जमीन से दो फीट ऊपर आ गया है और चारों तरफ जमीनों से पानी रिसने लगा है। खेतों में पानी भर गया है।

नारनौल। खराब हो गई फसल।

नपा ने चलाया सफाई अभियान

- नपा कर्मियों ने डस्टबिन इस्तेमाल के लिए दुकानदारों को जागरूक किया

हरिभूमि न्यूज ⏭ कनीना

नगर को साफ सुथरा शहर बनाने के लिए सामूहिक रूप से हरसंभव प्रयास किए जाएंगे। यह बात नपा चेयरपर्सन डॉ. रिम्पी लोढ़ा ने शनिवार को कॉलेज रोड पर चलाए गए सफाई अभियान को लेकर आमजन को जागरूक करते हुए कही। उन्होंने कहा कि कचरे की सफाई के साथ प्रत्येक नागरिक को नियमित रूप से सफाई करने के लिए मानसिक रूप से तैयार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि बीते 24 अगस्त से शुरू किया गया स्वच्छता अभियान 25 नवंबर तक जारी रहेगा। इस दौरान आमजन को स्वच्छता अभियान से जुड़ने के लिए अलग अलग एक्टिविटी की जाएगीं।कान्हा पार्क में पौधारोपण किया। वहीं स्कूल में विद्यार्थियों व दुकानदारों को अलग अलग रंग के डस्टबिन का प्रयोग करने के बारे में जानकारी दी।

नगर पालिका सचिव कपिल कुमार ने कहा कि बारिश के मौसम में झाड़ बोझे पनप जाते हैं तथा कीचड़ होने से हालात खराब हो जाते हैं। सफाई व्यवस्था प्रभावित होने मच्छर जनित बीमारियों के पनपने का अंदेशा रहता है। जिन पर नियंत्रण पाने के लिए स्वच्छता की अहम भूमिका है। उन्होंने कहा कि बुखार होने, कंपन व उल्टी होने, मांसपेशियों व जोड़ों में दर्द होने, आंखों में जलन होने पर नजदीकी अस्पताल में जाए और रक्त की जांच करवाएं। उन्होंने कहा कि बीमारी से बचाव के लिए आमजन घर के नजदीक गंदा पानी जमा न होने दें, घर के अंदर फर्श पर फिनाइल का पोछा लगाएं।

कनीना। डस्टबिन इस्तेमाल लिए दुकानदारों को जागरूक करते नपा कर्मचारी।

शहीद प्रवीन्द्र सिंह की प्रतिमा का किया गया अनावरण

- वीर अमर शहीद प्रवीन्द्र सिंह ने देश की रक्षा करते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया था

हरिभूमि न्यूज ⏭ नारनौल

सांसद चौधरी धर्मबीर सिंह ने शनिवार को गांव सुरहेती मोड़ियाना में 25 राजपूताना राइफल के वीर अमर शहीद प्रवीन्द्र सिंह की आदमकद प्रतिमा का अनावरण किया। यह समारोह शहीद के बलिदान दिवस के अवसर पर आयोजित किया गया। जिन्होंने आज ही के दिन देश की रक्षा करते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया था। कार्यक्रम की शुरूआत श्रद्धांजलि अर्पण के साथ हुई। जिसमें सांसद धर्मबीर सिंह ने शहीद प्रवीन्द्र सिंह के बलिदान को याद करते हुए कहा कि ऐसे सपूतों के कारण ही देश सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि शहीदों की स्मृति में आयोजित ऐसे कार्यक्रम युवाओं को प्रेरित करते हैं और उनमें देशभक्ति की भावना को प्रबल करते हैं। उन्होंने कहा कि देश के सैनिकों की बदौलत हम महफूज हैं। विधायक कंवर सिंह यादव ने कहा कि शहीद प्रवीन्द्र सिंह ने अपना जीवन देश को समर्पित कर दिया और उनकी यह प्रतिमा आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेगी। महंत बचनाई नाथ महाराज, पार्षद चौधरी रामपाल, सुनील नंबरदा,ए सरपंच रमेश सहित अनेक प्रबुद्धजन, समाजसेवी और ग्रामीण जन बड़ी संख्या में कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

नारनौल। शहीद प्रवीन्द्र सिंह की प्रतिमा अनावरण समारोह में संबोधित करते सांसद चौधरी धर्मवीर सिंह।

फिल्म का निर्देशन करेंगे अनिल कौशिक

महेंद्रगढ़। टीवी एवं रंगकर्मी कलाकार अनिल कौशिक हरियाणा पुलिस के लिए नशे के विरुद्ध एक डॉक्यूमेंट्री का निर्माण करेंगे। हरियाणा पुलिस के डीजीपी एनसीबी ओपी सिंह ने कौशिक को निर्माण की जिम्मेदारी सौंपी है। इस डॉक्यूमेंट्री फिल्म के निर्माण का कार्य शीघ्र प्रारंभ किया जाएगा। फिल्म में अधिकांश महेंद्रगढ़ के कलाकारों को अवसर दिया जाएगा। एनसीबी हरियाणा के लिए भारत प्रसिद्ध लाइट एंड साउंड शो राम गुरुकुल गमन के निर्माण का निर्देशन भी अनिल कौशिक द्वारा किया गया है।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
महेन्द्रगढ़ :- हरिभूमि कार्यालय, हुड्डा पार्क के सामने, डाक्टर भगत डैंटल अस्पताल वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, महेंद्रगढ़।
नारनौल :- सत्य प्लाजा, प्रथम तल, तरूण कलर लैब वाली गली, नजदीक बस स्टैंड, नारनौल
फोन : 8295738500, 9253681005

बाल विवाह के खिलाफ अभियान, धर्म गुरुओं ने लिया संकल्प

नारनौल। बाल विवाह के खिलाफ संकल्प लेते हुए सोसायटी फॉर एजुकेशन एंड वैलफेयर एक्टिविटिज सेवा संस्था ने शहर के विभिन्न धार्मिक स्थानों कार्यक्रम आयोजित किए। इन जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रन फाउंडेशन व जस्ट राईटस फॉर चिल्ड्रन के सौजन्य से एक्सैस टू जस्टिस प्रोग्राम फॉफ चिल्ड्रन परियोजना के करवाया गया। जिसकी शुरूआत करते हुए सेवा संस्था से सहायक कोर्डिनेट कुसुमलता ने बताया कि संस्था की ओर से जिले में बाल विवाह उन्मूलन पर सघन रूप से कार्य किया जा रहा है, जिसके तहत 12 से 19 सितम्बर तक विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में शनिवार को धर्म गुरुओं के संदेश द्वारा बाल विवाह रोकने का संकल्प लिया।

एमएससी रसायन शास्त्र और पर्यावरण विज्ञान शुरू

रसायन के नए पीजी पाठ्यक्रम की स्वीकृति का निरीक्षण

प्राचार्य प्रो. डा. पूर्ण प्रभा ने निरीक्षण से पहले नई सुविधाओं का किया निरीक्षण

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

राजकीय महाविद्यालय में सोमवार को इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय मीरपुर रेवाड़ी की निरीक्षण टीम महाविद्यालय में सत्र 2025-26 से एमएससी रसायन शास्त्र के नए पीजी पाठ्यक्रम तथा बीएससी फिजिकल साइंस और लाइफ साइंस में पर्यावरण विज्ञान विषय की स्वीकृति प्रदान करने के उद्देश्य से निरीक्षण किया गया। इस निरीक्षण को लेकर महाविद्यालय में व्यापक तैयारियां की जा रही हैं। महाविद्यालय की प्राचार्य एवं जिला उच्चतर शिक्षा अधिकारी प्रो. (डॉ.) पूर्ण प्रभा ने बताया कि निरीक्षण के दौरान सभी स्टॉफ सदस्यों को निर्धारित समय पर उपस्थित रहना अनिवार्य होगा। इस अवधि में महाविद्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों की छुट्टियां रद्द कर दी हैं। साथ ही विद्यार्थियों, विशेष रूप से विज्ञान संकाय के छात्र-छात्राओं को अधिक संख्या में उपस्थित रहने तथा निरीक्षण के दौरान सक्रिय सहयोग देने के लिए प्रेरित किया गया है। उन्होंने कहा कि यह महाविद्यालय के लिए गौरव का क्षण है और सभी को मिलकर इसे सफल बनाना चाहिए। इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय से आने वाली टीम का नेतृत्व रसायन शास्त्र विभाग से प्रो. करण सिंह करेंगे।

महेंद्रगढ़। महाविद्यालय का निरीक्षण करती प्राचार्या पूर्ण प्रभा। फोटो : हरिभूमि

कक्षाओं का संचालन नियमित रूप से करें

इसके साथ ही एमएससी रसायन शास्त्र का पाठ्यक्रम भी प्रारंभ किया जा रहा है, जो क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा में नए अवसर प्रदान करेगा। प्राचार्य प्रो. डॉ. पूर्ण प्रभा ने कहा कि यह उपलब्धि महेंद्रगढ़ क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है और विद्यार्थियों को इसका भरपूर लाभ उठाना चाहिए। प्राचार्य पूर्ण प्रभा द्वारा नए विज्ञान भवन का औचक निरीक्षण भी किया तथा सभी स्टाफ सदस्यों को निर्देश दिया कि कक्षाओं का संचालन नियमित रूप से करें, प्रयोगशाला में आवश्यक उपकरण और सामग्री पूरी तरह से उपलब्ध हो और किसी भी प्रकार की कमी न हो। निरीक्षण से पहले सभी आवश्यक दस्तावेज, प्रयोगशाला सामग्री तथा अन्य व्यवस्थाएं पूर्ण कर ली जाए ताकि निरीक्षण टीम का कार्य सुगमता से संपन्न हो सके। निरीक्षण के दौरान प्रयोगशाला कक्षाओं तथा अन्य आवश्यक सुविधाओं का जायजा लिया गया ताकि निरीक्षण टीम के सामने कोई कमी न रहे।

हरिभूमि
रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 14 सितंबर 2025

विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली तीसरी भाषा हिंदी की जड़ें प्राचीन भारतीय आर्य भाषा परिवार की है, जिसकी जननी संस्कृत है। संस्कृत, जिसे 'देववाणी' भी कहा जाता है। इसकी विशिष्टताओं ने हिंदी को आज विश्व के कोने-कोने तक पहुंच दिया है। अगर इसके प्रसार के लिए कुछ और प्रयास किए जाएं तो निस्संदेह इसका वर्चस्व और भी बढ़ेगा।

हिंदी दिवस विशेष

भारत की आत्मा है हिंदी

{ आवरण कथा / भूपेंद्र शर्मा }

आज हिंदी भाषा भारत तक सीमित नहीं है। यह विश्व भर में एक सशक्त पहचान बना चुकी है। दुनिया के कई देशों में लाखों लोगों द्वारा बोली जाती है। भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में, हिंदी सीखने से भारतीय आबादी के एक बड़े हिस्से के साथ संवाद एवं जुड़ने का अवसर मिलता है। भारत की विविध संस्कृति, जीवंत अर्थव्यवस्था तथा समृद्ध विरासत हिंदी को यात्रा, कार्य एवं सांस्कृतिक खोज के लिए एक श्रेष्ठ माध्यम बनाती है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत के बढ़ते प्रभाव के कारण हिंदी में कुशल पेशेवरों की मांग बढ़ रही है। कई बहुराष्ट्रीय कंपनियां, विशेष रूप से जिनके भारत में निर्माण, उत्पादन कार्य या ग्राहक हैं, उन कर्मचारियों को महत्व देती है, जो हिंदी में प्रभावी ढंग से संवाद कर सकते हैं। हिंदी सीखना करियर की संभावनाओं को बढ़ा सकता है, खासकर अंतरराष्ट्रीय व्यापार, पर्यटन, पत्रकारिता, अनुवाद एवं कूटनीतिक सेवाओं जैसे क्षेत्रों में।

क्षेत्रीय भाषाओं का प्रवेश द्वार

हिंदी का विकास कई चरणों में हुआ। अपभ्रंश से होते हुए, इसने अपनी वर्तमान पहचान बनाई। मध्यकाल में खड़ी बोली के रूप में इसने अपनी नींव रखी, जो आगे चलकर आधुनिक हिंदी का आधार बनी। हिंदी भारत में बोली जाने वाली विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं को समझने एवं सीखने के लिए एक प्रवेश द्वार की तरह है। बंगाली, मराठी, गुजराती एवं पंजाबी सहित कई भारतीय भाषाएं व्याकरण, शब्दावली तथा लिपि के मामले में हिंदी के साथ समानताएं साझा करती हैं।

फिल्म उद्योग तक पहुंच

भारतीय फिल्म उद्योग में प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में फिल्मों का निर्माण होता है, जिन्हें भारत में ही नहीं, विश्व के अनेक देशों में देखा जाता है। हिंदी सिनेमा की विश्व में अद्भुत लोकप्रियता है। विदेशों में हिंदी के प्रसार में हिंदी फिल्मों का बड़ा योगदान है। हिंदी फिल्में, हिंदी गीत एवं टीवी शो की जीवंत दुनिया हिंदी सीखने वालों के लिए बड़ा सरल माध्यम है। वहीं इनके माध्यम से विश्वभर में फैले भारतीय प्रवासियों के साथ भारत एवं भारतीय संस्कृति के अटूट, मधुर संबंध स्थापित होते हैं। इसीलिए हिंदी को भारत की आत्मा कहते हैं।

विश्व में 61 करोड़ हिंदी भाषी

वर्ल्ड लैंग्वेज डेटाबेस के अनुसार, हिंदी भाषा वर्तमान समय में 61 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है। विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस में स्थित है। यह सचिवालय हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए 11 फरवरी 2008 से कार्यरत है। हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए समय-समय पर अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है।

राजभाषा विभाग के प्रयास

सन 2019 से सभी 59 मंत्रालयों में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया। अब तक कुल 528 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन भी किया जा चुका है। विदेशों में भी लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई एवं पोर्ट-लुई में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां बनाई गई हैं। भारत ने संयुक्त राष्ट्र में हिंदी भाषा के उपयोग को बढ़ावा देने की भी पहल की है। पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन बनारस में 13-14 नवंबर, 2021 को तथा 14 सितंबर 2022 को सूरत में दूसरा सम्मेलन आयोजित किया गया। इस साल पुणे में तीसरा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। विभाग ने कुल 90 हजार शब्द का एक 'ई-महाशब्दकोष' मोबाइल एप तथा लगभग 9 हजार वाक्य का 'ई-सरल' वाक्यकोष भी तैयार किया है।

हिंदी की विशिष्टताएं

देवनागरी लिपि: हिंदी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, जो देखने में मनमोहक और ध्वन्यात्मक रूप से सटीक है। इसमें 11 स्वर एवं 33 व्यंजन हैं, जिनमें प्रत्येक ध्वनि का अलग स्वर एवं उच्चारण है।

स्वर की लंबाई: हिंदी में कुछ स्वर ध्वनियों का उच्चारण विस्तारित अवधि के साथ किया जा सकता है, जिससे शब्दों का अर्थ बदल जाता है। उदाहरण के लिए, 'मा' का अर्थ 'मां' है, जबकि 'मान' का अर्थ 'सम्मान' है।

मानद रूप: हिंदी व्यक्तियों को सम्मानपूर्वक संबोधित करने के लिए मानद रूपों को शामिल करती है। बड़ों, सम्मानित व्यक्तियों या उच्च सामाजिक स्थिति वाले व्यक्तियों से बात करते समय सम्मानजनक सर्वनामों, क्रिया रूपों एवं वाक्य संरचनाओं का उपयोग भाषा के सांस्कृतिक प्रभाव को सम्मान एवं शिष्टाचार के साथ प्रदर्शित करता है।

लिंग वाली संज्ञा: हिंदी में संज्ञाओं के तीन लिंग हैं। पुल्लिंग, स्त्रीलिंग एवं नपुंसकलिंग। एक संज्ञा का लिंग अकसर विशेषणों, क्रियाओं तथा सर्वनामों के समझौते को निर्धारित करता है, जो इसके साथ उपयोग किए जाते हैं।

सर्वनाम का अंतर: हिंदी एकवचन के लिए औपचारिक एवं अनौपचारिक सर्वनामों के बीच अंतर करती है। औपचारिक सर्वनाम 'आप' का प्रयोग सम्मान दिखाने या उच्च पदस्थ व्यक्ति को संबोधित करने के लिए किया जाता है, जबकि अनौपचारिक सर्वनाम 'तुम' का प्रयोग समान सामाजिक स्थिति वाले व्यक्तियों के साथ किया जाता है।

जटिल क्रिया प्रणाली: हिंदी की क्रिया प्रणाली में विभिन्न क्रिया रूप एवं काल हैं। क्रियाओं का संयोजन तनाव, पहलू, मनोदशा एवं विषय के साथ समझौते जैसे कारकों से प्रभावित होता है, जिससे भाषा की क्रिया संरचना जटिल तथा अभिव्यंजक हो जाती है।

संस्कृत का प्रभाव: हिंदी पर संस्कृत का गहरा प्रभाव है। कई हिंदी शब्दों की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है, जो शब्दावली को समृद्ध करती है तथा भारत की प्राचीन सांस्कृतिक एवं दार्शनिक परंपराओं के साथ गहरा संबंध प्रदान करती है।

ध्वनि विविधता: हिंदी में ध्वनियों की एक विस्तृत श्रृंखला है, जिसमें स्वर, व्यंजन एवं नासिक्य ध्वनियां हैं। इसकी ध्वन्यात्मक सूची विविध मधुर उच्चारण प्रवाहित करती है।

क्षेत्रीय विविधता: भारत के विभिन्न हिस्सों में हिंदी की विभिन्न क्षेत्रीय बोलियां तथा शैली है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी शब्दावली, उच्चारण एवं व्याकरणिक विविधताएं हैं, जो हिंदी भाषी जनमन के भीतर भाषाई विविधता को दर्शाती हैं।

अभी अधूरा है विकास

हिंदी अपनी वैश्विक पहचान रखती है, किंतु इसके विकास के लिए अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है।

तकनीकी विकास: हिंदी में तकनीकी शब्दावली को अधिक विकसित करने की आवश्यकता है, ताकि विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में इसका उपयोग बढ़ सके।

मानकीकरण एवं सरलता: बोल-चाल एवं लेखन में एकरूपता लाने के लिए मानकीकरण को बढ़ावा देना आवश्यक है।

सरकारी प्रोत्साहन: सरकार को हिंदी के उपयोग को सभी क्षेत्रों में बढ़ावा देना चाहिए, विशेषकर शिक्षा एवं प्रशासनिक कार्यों में।

वैश्विक मंचों पर उपयोग: अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के प्रयास होने चाहिए। *

हिंदी दिवस और संविधान में स्थान

हिंदी दिवस मनाने का इतिहास भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ा है। 14 सितंबर 1949 को, भारतीय संविधान सभा ने हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाया। यह निर्णय हिंदी को राष्ट्र की एकता के सूत्र के रूप में स्थापित करने के लिए लिया गया था। पहला हिंदी दिवस 1953 में मनाया गया। यह दिन हमें भाषा के महत्व और उसके संरक्षण की याद दिलाता है। भारतीय संविधान के भाग-17 में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा संबंधी उपबंध हैं। अनुच्छेद 120 (संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा) भाग 17 में अनुच्छेद 348 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, संसद में कार्य हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा। अनुच्छेद 343 (संघ की राजभाषा) संघ की राजभाषा हिंदी एवं लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा।

{ विचारणीय / लोकमित्र गौतम }

हिंदी को लेकर सहज नहीं युवा पीढ़ी

इसे विडंबना ही कहना चाहिए कि जिस हिंदी को बोलने, जिसमें मनोरंजन करने में युवा पीढ़ी खूब आनंद लेती है, उसे ही लिखने और पढ़ने में असहज रहती है। हालांकि इसके लिए सिर्फ वही नहीं जिम्मेदार है। ऐसे में इस समस्या के निराकरण के लिए परिवार, समाज से लेकर व्यवस्था तंत्र को भी विचार करना होगा।

भारत की कुल आबादी में से 65 फीसदी से ज्यादा युवा हैं, जिनकी उम्र 35 साल या इससे कम है। इनमें से 60 से 65 फीसदी युवा फर्राटे से हिंदी बोलते-समझते हैं। ये आमतौर पर हिंदी फिल्में भी देखते हैं और ओटीटी प्लेटफॉर्म पर भी हिंदी के कार्यक्रम चाव से देखते हैं। मगर इनकी एक ऐसी कमजोरी है, जिस पर आम लोगों का यकायक ध्यान नहीं जाता। इनमें से करीब आधे युवा ऐसे हैं, जो हिंदी बोलते हैं, समझते हैं, लेकिन प्रवीणता से हिंदी पढ़ और लिख नहीं पाते। कुछ पढ़ते भी हैं तो सहजता से शुद्ध-शुद्ध नहीं पढ़ पाते।

आधी युवा आबादी है असहज: देश में हिंदी बोलने वाले करीब आधे युवा हिंदी में कतई सहज नहीं है। ऊपर से देखने में यह कोई बहुत बड़ी समस्या नहीं लगती। यहां तक कि हिंदी भाषी मां-बाप को भी अपने हिंदी लिख और पढ़ न पाने में असहज बच्चों से किसी तरह की भावनात्मक परेशानी नहीं होती, लेकिन सच बात यह है कि हिंदी की सबसे कमजोर कड़ी यही युवा पीढ़ी है, जो ऊपर से तो हिंदी में बहुत सहज दिखती है, मगर भीतर से हिंदी को लेकर बिल्कुल असहज है। दरअसल, यही वह पीढ़ी है, जो अप्रत्यक्ष रूप में हिंदी को मौखिक भाषा तक सीमित करने में लगी है।

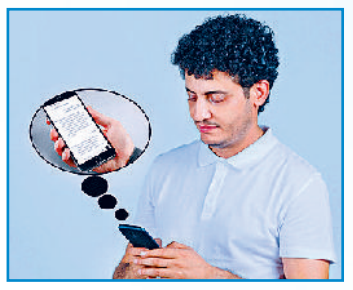

शैक्षिक-सांस्कृतिक विडंबना: यह सचमुच हिंदी के साथ बड़ी भाषाई विडंबना है, क्योंकि हिंदी बोलने वाले, हिंदी पढ़ने वाले, हिंदी में मनोरंजन करने वाले युवा बाहरी तौर पर यह प्रभाव देते हैं कि जैसे वो हिंदी सेवी हों। पर वास्तव में वो हिंदी सेवी नहीं होते। दक्षिण भारत में खासकर बेंगलुरु, चेन्नई में जिन उत्तर भारतीय युवाओं की पहचान हिंदीभाषी होने से है, वास्तव में ये हिंदीभाषी समझे जाने वाली युवा पीढ़ी का बड़ा हिस्सा भी उन्हीं की तरह हिंदी में असहज है। भले यह बाहरी तौर पर हिंदी वाले लगते हों, पर सचमुच में ये हिंदी वाले नहीं हैं, हिंदी को इनसे फायदा कम, नुकसान ज्यादा होता है, क्योंकि हिंदी बोलना, हिंदी में बातें करना, हिंदी में मनोरंजन करना, लेकिन हिंदी लिख और पढ़ न पाना या इसमें सहज न हो पाना, सिर्फ भाषाई समस्या नहीं है। यह सांस्कृतिक और शैक्षिक त्रासदी भी है।

नहीं है हिंदी की गहरी समझ: दक्षिण या पश्चिम भारत के बड़े शहरों में ही नहीं बल्कि उत्तर भारत के भी बड़े शहरों में ऐसे युवाओं की भरमार है। दिल्ली में भी 25 से 30 फीसदी ऐसे युवा हैं, जो बस हिंदी में बातें करते हैं, गाने सुनते हैं, वेब सीरीज देखते हैं, लेकिन सौ शब्दों का आवेदनपत्र हिंदी में नहीं लिख सकते। घंटों हिंदी में बहस करने वाले उस विषय पर एक पेज भी हिंदी में नहीं लिख पाते। यह इसलिए बड़ी समस्या है कि इससे हिंदी की असली समस्या पर पर्दा पड़ा रहता है। यह भ्रम बना रहता है कि हिंदी, बोलने, जानने और समझने वाले बहुत बड़ी तादाद में लोग हैं। लेकिन यह ऐसी ढोल के भीतर पोल वाली खोखली पीढ़ी है, जो न तो हिंदी का साहित्य जानती है, न कविता जानती है, न हिंदी के अखबार पढ़ती है और न ही हिंदी के ऐतिहासिक दस्तावेजों से ही इसका कोई परिचय है। ऐसे में भला यह पीढ़ी हिंदी का कैसे भला करेगी? यह तो उल्टा हिंदी में रह कर ही हिंदी को कमजोर करती है।

पहचान होती है मातृभाषा: अगर आप ऐसी पृष्ठभूमि से आते हैं कि आपके घर की भाषा यानी मातृभाषा हिंदी है और पढ़ाई और कामकाज की भाषा अंग्रेजी है, तो भले रोज के कामकाजी घंटों में आपको यह खुशफहमी रहती हो कि अपनी कमजोर हिंदी को लेकर आपमें किसी तरह की असहजता नहीं है, लेकिन वास्तविकता यह होती है कि अगर हम अपनी मातृभाषा को पढ़ने और लिखने में सहज नहीं होते तो हमारे अंदर एक स्वतः जन्मी हीन भावना हर समय रहती है। जो लोग अपनी मातृभाषा को सही से लिखना, पढ़ना नहीं जानते, उन्हें अपनी दुनिया के सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भों का भी पता नहीं होता। दिन रात अंग्रेजी पढ़ने वाले ज्यादातर भारतीय अंग्रेजी के मुहावरों, उसकी लोकोक्तियों में मौजूद गहरे सांस्कृतिक संदर्भों से कभी नहीं जुड़ पाते, इसलिए बहुत सी बातों को वो कभी भी गहराई से समझ नहीं पाते। हमें लिपि की कठिनाई का बहाना बनाकर अपनी भाषा से नहीं कटना चाहिए। एक बार अगर हम अपनी भाषा से कट गए, तो हम अपनी स्मृतियों से, पीढ़ीगत धरोहरों से और साहित्यिक विरासत से भी कट जाते हैं।

डिजिटल जीवनशैली का प्रभाव: इसमें आज की डिजिटल लाइफस्टाइल और बाहर के देशों से आने वाली तकनीकी का भी हाथ है। लेकिन इस आरोप से तो हम अपनी भाषा के साथ लगाव न रख पाने को सही नहीं ठहराते। माना कि डिजिटल युग में मोबाइल और सोशल मीडिया में रोमन लिपि में लिखे, पढ़े जाने का चलन है, जिससे देवनागरी की प्रैक्टिस खत्म होती है। लेकिन यह यूं ही स्वतः नहीं पैदा हो गया। इस स्थिति के पैदा होने में बकायदा सांस्कृतिक संदर्भों का योगदान है। आज जिस तकनीक का आप अपने जीवन में इस्तेमाल कर रहे हैं, वह किसी हिंदी भाषी ने नहीं विकसित की, वह इस तकनीक को हिंदी के अनुकूल क्यों विकसित करता? अतः हिंदी के साथ अपने सहज और आत्मीय रिश्ते आपको खुद ही रखने है, इसके लिए किसी तकनीकी कमी या उसके संकट को बहाना नहीं बना सकते। *

{ व्यंग्य / सूर्य कुमार पांडेय }

हिंदी से हमें आशा है। हिंदी हमारी राजभाषा है। इसके स्मरण मात्र से पुलकित हो उठता हमारा अंग-अंग है। हिंदी हमारी मदर टंग है। मैं कहां तक करूं हिंदी की महिमा का बखान? हिंदी है सूर, तुलसी, मीरा, रसखान। इसीलिए हम इसकी पूजा करते हैं।

हिंदी हमारी मदर टंग है

मुझे हिंदी दिवस के एक कार्यक्रम में जाना पड़ा। मैं जैसे ही माइक के सामने हुआ खड़ा, आयोजक ने कहा, 'आज आपको हिंदी पर एक कविता जरूर सुनानी है।'

मैंने कहा, 'तो सुनिए, जो हिंदी की कहानी है। हिंदी समस्त भारतीय भाषाओं की रानी है। हिंदी का बड़ा सम्मान है। यह हमारी आन-बान-शान है। इस पर हमें गर्व है, दर्प है, अभिमान है। क्योंकि हिंदी महान है।

हिंदी से हमें आशा है। हिंदी हमारी राजभाषा है। इसके स्मरण मात्र से पुलकित हो उठता हमारा अंग-अंग है। हिंदी हमारी मदर टंग है। मैं कहां तक करूं हिंदी की महिमा का बखान? हिंदी है सूर, तुलसी, मीरा, रसखान। इसीलिए हम इसकी पूजा करते हैं। वर्ष भर पूजाघरों में मूर्तिवत सजाकर-संवार कर धरते हैं। इस भाषा में नहीं है कोई खोट। इसे साल के बाकी दिनों में तलाशो तो हिंदी वैसे ही मिला करती है, जैसे किसी माफिया के पूजाघर में रखे हुए नंबर दो के करेंसी नोट।

हिंदी हमारी अभिलाषा है। यह हमारी राजभाषा है। इसलिए इसकी पूजा करना हमारी मजबूरी है। जैसे आज की सियासत में अशालीन होना जरूरी है।

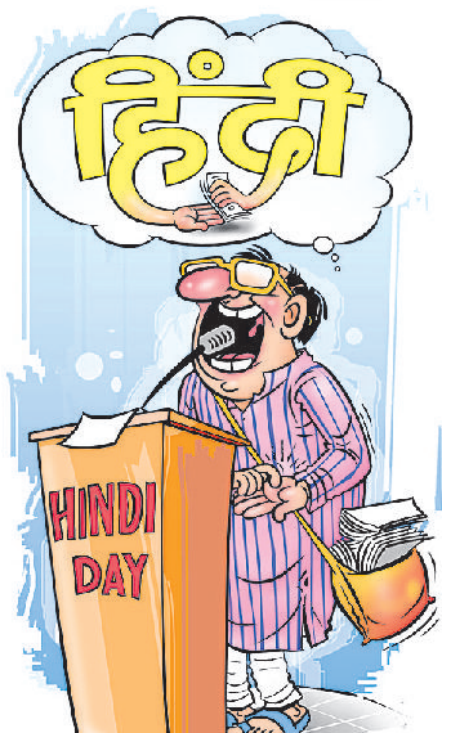

हिंदी का बड़ा महत्व है। हिंदी से हमें ममत्व है। हिंदी हमारे लिए वैसे ही है, जैसे गांव वालों के लिए मेला, जैसे मजदूरों के लिए ठेला और रैली में रेला। हिंदी हमारी शोभा है, हमारा अलंकार है। हिंदी हमारा अंतिम प्यार है। हिंदी का नाम लेते ही हमारे अधरों पर फूल खिलते हैं। हिंदी हमारे लिए इसलिए भी प्यारी है

क्योंकि हिंदी में मांगों तो वोट भी आसानी से मिलते हैं। इसीलिए तो हर राजनेता हिंदी के साथ दिखता है। अहिंदी भाषी सियासातदान भी हिंदी सीखता है।

हिंदी पर अब और कितना सुनाऊं मेरे भाई? हिंदी हमारे भाल की बिंदी है, और लोग हैं कि इतनी-सी बात समझ पाते नहीं कि मर्द बिंदी लगाते नहीं। तो आधी आबादी को छूट, बच गई आधी तो उसको भी है आजादी कि फैशन से फुर्सत हो तो बिंदी लगाएं। इस विदेशी कल्चर की क्यारी में हम कैसे हिंदी का प्लांट लगाएं? कहिए, आयोजक जी, अभी भी आपका मन नहीं भरा हो तो हम हिंदी पर और भी सुनाएं।'

आयोजक बोला, 'अब आप कृपापूर्वक जाएं और नेक्स्ट ईयर अगेन हिंदी पर ऐसी ही एक नई कविता लिखकर अवश्य लाएं।' *

इंजेक्शन की नवीन तकनीक से स्पाइन रोगों का उपचार

सर्जरी के बिना ही सिर्फ इंजेक्शन तकनीक के जरिये स्पाइन (रीढ़) रोगों का बेहतर और विश्वसनीय उपचार विश्वविख्यात डॉ. प्रमोद पहारिया द्वारा ग्वालियर में हो रहा है। आईये जानते हैं इस तकनीक के असाधारण लाभ–

मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश ने डॉ. प्रमोद पहारिया को प्राईड ऑफ एम.पी. अवार्ड दिया।

इस ट्रीटमेंट की कितनी बार आवश्यकता होती है?
सिर्फ एक ही बार पर्याप्त है।

सर्जरी की अपेक्षा इस तकनीक के क्या फायदे हैं?
सर्जरी के दौरान पैरालिसिस, पैलाप्लेजिया, ब्लैडर एवं बोवेल के कंट्रोल में क्षति, पैरों में कमजोरी, इंफेक्शन, इंप्लांट फैलियर जैसे जो कॉम्पिलकेशन देखने को मिलते हैं, वैसा इसमें खतरा नहीं है।

किन मरीजों का इलाज इस तकनीक से संभव है?
डिस्क प्रोलेप्स जैसे L4-L5, L5-S1, साइटिका, लंबर या सर्वाइकल रेडीक्युलोपैथी, डिजरनेरेटिव डिस्क, फैसिट जॉइन्ट सिंड्रोम, माइलोपैथी, लंबर कैनाल स्टेनोसिस, स्पॉन्डिलाइटिस आदि में कारगर है।

जो रोगी ऑपरेशन करवा चुके हैं उसमें भी यह कारगर है ?
यदि ऑपरेशन के बाद दबाव बना रहता या दोबारा दबाव आ जाता है तो उसमें भी यह तकनीकी कारगर है।

किस उम्र के लिये यह चिकित्सा है?
15 से 85 वर्ष के मरीजों के लिये।

एक डिस्क लेवल के ट्रीटमेंट में कितना खर्च आता है?
स्पाइन सर्जरी में जहां 3 लाख तक का खर्चा आता है वहीं यह उपचार मात्र 20000 तक में हो जाता है। विदेशों में इसका खर्च 50 गुना तक है।

कितने समय में रोगी घर जा सकता है?
एक घण्टे बाद ही घर जा सकता है। जबकि सर्जरी में 3 माह तक रोगी को अपने काम से अलग रहकर आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है।

इस ट्रीटमेंट की सफलता की दर कितनी है?
90 से 95% सफल है। अब तक लगभग 7,500 मरीज हमेशा के लिए ठीक हो चुके हैं। यह इंजेक्शन प्रॉब्लम साइट में लगाया जाता है।

इस ट्रीटमेंट का असर कब तक रहता है?
इसमें जड़ से इलाज होता है।

क्या यह स्टेरॉइड इंजेक्शन है?
नहीं, यह एक भ्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक विशेष मशीन की निगरानी में किया जाता है।

NBC®

डॉ. प्रमोद पहारिया
स्पाइन सर्जन
MBBS, D.Ortho, DNB, M.Ch. (Ortho)
पूर्व सर्जन– सर गंगाराम हॉस्पिटल एवं इंडियन स्पाइनल इंज्यूरी सेन्टर, नई दिल्ली
देहली हॉस्पीटल, ओल्ड श्री टॉकीज, बारादरी, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
समय : दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक
व्हाट्सएप पर रिपोर्ट भेजकर ही संपर्क करें
सम्पर्क – 7354858466 | www.nonsurgicalspinecentre.in

{ लघुकथा / शीला श्रीवास्तव }

हिंदी बनाम इंग्लिश

रिया बहुत देर से अपने कमरे में चहलकदमी कर रही थी। नमिता ने पूछा, 'क्या बात है बेटी, क्यों परेशान हो?'

'मेरे स्कूल में पैरेंट्स मीटिंग है, और पापा घर पर नहीं हैं।' रिया खीझे स्वर में अपनी मम्मी से बोली।

'अरे तो क्या हुआ? मैं हूं ना। मैं चलती हूं पैरेंट्स मीटिंग में।' मां बोलीं।

'आप तो रहने ही दें। आपको इंग्लिश बोलना कहां आती है? आप आएंगी तो मेरा स्कूल में मजाक ही बनेगा।' रिया का जवाब सुनकर मां स्तब्ध रह गई। इस बात के लिए वह अकसर अपने पति से भी खरी-खोटी सुनती थी, आज बेटी ने भी सुना दिया। कुछ दिनों बाद स्कूल में हिंदी दिवस के अवसर पर एक प्रतियोगिता का आयोजन होने वाला था, जिसका शीर्षक था, 'हिंदी बनाम इंग्लिश।' रिया जानती थी, मम्मी की हिंदी पर बहुत अच्छी पकड़ है। उसने पहले मम्मी से अपने पिछले बर्ताव के लिए मांफी मांगी फिर बोली, 'मम्मी, प्लीज आप मेरे लिए एक स्पीच लिख कर दे दीजिए।' मां पूरे मनोयोग से स्पीच लिखने में जुट गई। उसकी मेहनत रंग लाई। रिया को प्रथम पुरस्कार मिला। स्कूल से आते ही रिया अपनी मम्मी के गले लग गई, बोली, 'आपके लिखे स्पीच ने आज मुझे स्कूल में फेमस कर दिया। यूं आर ग्रेट मम्मी! यह पुरस्कार मैं आपको समर्पित करती हूं।'

अपनी बेटी की नजरों में अपने लिए सम्मान देख मां की आंखें खुशी से छलक आईं। *

स्पेशलः इंजीनियर्स डे, 15 सितंबर

पिछली सदी में हुए भारत के महान सिविल इंजीनियर एम. विश्वेश्वरैया की जयंती को इंजीनियर्स डे के रूप में मनाते हैं। इस अवसर पर हम आपको बता रहे हैं देश के अलग-अलग इलाकों में स्थित कुछ ऐसे निर्माणों के बारे में, जो इंजीनियरिंग की शानदार मिसाल पेश करते हैं। इनकी विशेषताओं के बारे में जानकर आप अचरज किए बिना नहीं रह पाएंगे।

देश में कई जगह मौजूद हैं इंजीनियरिंग के गौरवशाली प्रतीक

चिनाब पुल जम्मू-कश्मीर के रियासी में

बांद्रा-वर्ली सी लिंक मुंबई में

बेमिसाल

शिखर चंद जैन

अपने देश के अलग-अलग क्षेत्रों में निर्मित किए गए इंजीनियरिंग के ये नायाब नमूने हर किसी को हैरान कर देते हैं। ये गौरवशाली प्रतीक भारतीय इंजीनियरिंग की नई प्रगति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

चिनाब रेलवे ब्रिज

जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में स्थित यह विश्व का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। यह 359 मीटर ऊंचा है। अनूठा चिनाब ब्रिज पेरिस के एफिल टॉवर से भी 35 मीटर ऊंचा है। इसका निर्माण कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन और इंजीनियरिंग संस्थान आईआईएससी बेंगलुरु द्वारा किया गया है। आईआईटी दिल्ली और आईआईटी रुड़की ने इसकी भूकंप सहनशीलता का विश्लेषण किया, जबकि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने इसके विस्फोट-प्रतिरोधी होने की पुष्टि की।

यह 8 तीव्रता तक के भूकंप के झटके, 40 टन टीएनटी तक का विस्फोट, -20 डिग्री सेल्सियस तक तापमान और 266 किमी. प्रति घंटा की गति वाली आंधी को सहन करने की क्षमता रखता है। दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल माना जाने वाला चिनाब पुल, जम्मू और कश्मीर के रियासी जिले में बक्कल और कौरी के बीच स्थित है। यह उधमपुर, श्रीनगर, बारामुला रेलवे लिंक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उद्देश्य जम्मू और कश्मीर को शेष भारत से जोड़ना है। इसके कारण क्षेत्र में कनेक्टिविटी काफी सुविधाजनक हो गई है।

स्टेच्यू ऑफ इक्वेलिटी

हैदराबाद (तेलंगाना) में स्थित यह विशाल प्रतिमा 11वीं शताब्दी के वैष्णव संत श्री रामानुजाचार्य की है। 5 फरवरी 2019 को, भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद

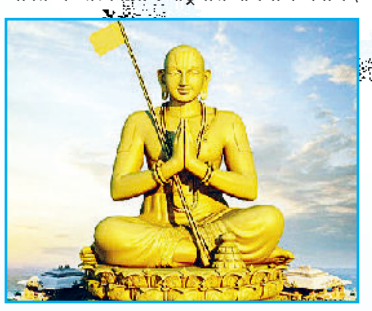

ने इस प्रतिमा का अनावरण किया। यह प्रतिमा समानता, न्याय और करुणा के उस दृष्टिकोण का प्रतीक है, जिसका उपदेश श्री रामानुजाचार्य ने मानवता को दिया था। स्टेच्यू ऑफ इक्वेलिटी की ऊंचाई 216 फीट है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थित स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी के बाद दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी प्रतिमा है। यह मूर्ति एक विशेष कांस्य मिश्र धातु से बनी है, जिसे पंच धातु कहा जाता है। इसमें श्री रामानुजाचार्य को बैठी हुई मुद्रा, कमल मुद्रा, पद्मासन और पारंपरिक मुद्रा में दर्शाया गया है, जो शांति और ध्यान दोनों का प्रतीक माना जाता है। यह प्रतिमा 54 फुट ऊंचे चबूतरे पर स्थापित है, जिस पर संग्रहालय और अनुसंधान केंद्र स्थित हैं। यह चबूतरा रामानुजाचार्य के संदेश के स्तंभों और आधुनिक विश्व में उनकी प्रासंगिकता का प्रतीक है। यह समाज में समानता और देश में एकता का प्रतीक भी है। इसके चारों ओर एक मंदिर परिसर और आगंतुकों के लिए एक उच्च-तकनीकी केंद्र है। यह प्रतिमा और परिसर इंजीनियरिंग के अद्भुत कौशल को प्रदर्शित करता है।

बांद्रा-वर्ली सी लिंक

मुंबई में रहने वाले बहुत से निवासी बांद्रा-वर्ली सी लिंक के जरिए यात्रा करते हैं। यह शानदार केबल-स्टेड ब्रिज भारत की आधुनिक इंजीनियरिंग विशेषज्ञता का एक अनुपम उदाहरण है। 5.6 किलोमीटर लंबा यह पुल बांद्रा और वर्ली के व्यस्त उपनगरों को जोड़ता है, जिससे शहर की भीड़-भाड़ वाली सड़कों पर सफर का समय कम हो जाता है। केबलों को थामे रखने वाले विशाल खंभे समुद्र तल से 128 मीटर ऊपर हैं। 66 फीट चौड़े इस ब्रिज पर आठ लेन में आवागमन होता है। वर्ष 2000 में इसका निर्माण शुरू हुआ और वर्ष 2010 में यह आम जनता के लिए खोल दिया गया।

पीर पंजाल अटल रेलवे सुरंग

वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा '10,000 फीट से ऊपर दुनिया की सबसे लंबी राजमार्ग सुरंग' के रूप में दर्ज, अटल सुरंग हिमाचल प्रदेश में मनाली-लेह राजमार्ग पर रोहतांग दर्रे के नीचे स्थित है। चुनौतीपूर्ण भू-भाग और जमा देने वाले तापमान में निर्मित, 9.02 किलोमीटर लंबी इस सुरंग को रोहतांग सुरंग के नाम से भी जाना जाता है। इसका निर्माण सर्दियों के महीनों में राजमार्ग के बंद होने की समस्या को दूर करने के लिए किया गया है, जिससे लाहौल और स्पीति अलग-थलग पड़ जाते थे। सुरंग के निर्माण से मनाली-केलांग मार्ग की दूरी 46 किलोमीटर कम हो गई है, जिससे इस दूरी की यात्रा का समय लगभग चार से पांच

घंटे कम हो गया है। हिमालय में पीर पंजाल पर्वतमाला की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों को देखते हुए, इस सुरंग के निर्माण के लिए उत्कृष्ट तकनीकी और इंजीनियरिंग कौशल का उपयोग किया गया। यह प्रभावशाली परियोजना आधुनिक सिविल इंजीनियरिंग में भारत की विशेषज्ञता का गौरव है और भारत के सर्वश्रेष्ठ सिविल इंजीनियरिंग चमत्कारों में से एक है। *

धीरूभाई अंबानी इंटरनेशनल स्कूल

मुंबई, महाराष्ट्र में स्थित यह एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय स्कूल है। यहां वर्षाजल का संचयन और ऊर्जा संरक्षण सहित समकालीन वास्तुकला सुविधाएं मौजूद हैं। डिजाइन से संबंधित आधुनिक विशेषताओं के लिए इसे सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में से एक माना जाता है क्योंकि यह स्थिरता के बारे में बहुत कुछ कहता है। स्कूल ने हाल ही में अत्याधुनिक सुविधाओं को शामिल किया है, जिसमें सौर पैनल और जल पुनर्चक्रण प्रणालियों सहित एडवांस्ड ग्रीन टेक्नोलॉजी का उपयोग किया गया है। अत्याधुनिक कक्षाएं और इंटरेक्टिव शिक्षण वातावरण एक सुव्यवस्थित परिसर में जोड़े गए हैं, जो पर्यावरणीय जिम्मेदारी के साथ शिक्षा में उत्कृष्टता पर जोर देते हैं। इंजीनियर्स के योगदान से ही इसका निर्माण संभव हो पाया है।

तेलंगाना राज्य का प्रसिद्ध लोक-महोत्सव बतकम्मा, महिलाओं के सम्मान और प्रकृति से जुड़ाव का प्रतीक पर्व है। भाद्रपद अमावस्या से शुरू होकर दुर्गाष्टमी तक नौ दिनों तक मनाए जाने वाले इस उत्सव के दौरान कला, संस्कृति और प्रकृति के आपसी जुड़ाव की निराली छटा दिखती है।

स्त्री सम्मान-प्रकृति प्रेम का प्रतीक लोक-महोत्सव बतकम्मा

सांस्कृतिक पर्व

सरिता सुराणा

हमारे देश में वर्ष भर त्योहारों का मेला लगा रहता है। सभी क्षेत्र, जाति और धर्म के लोग उत्साह-उमंग से विभिन्न पर्व मनाते हैं। लेकिन अलग-अलग राज्यों में भी अपने-अपने कुछ विशेष त्योहार मनाए जाते हैं। उन्ही में से एक है बतकम्मा पर्व। इसे तेलंगाना राज्य की महिलाएं मनाती हैं।

वातावरण में लहराती हैं स्वर लहरियां

छिन्निमा बतकम्मा, छिन्नारक्का बतकम्मा,
दादी मां बतकम्मा, दामेरमुतक्कल बतकम्मा।

ऐसे गीतों की मधुर स्वर लहरियां जब वातावरण में गूंजने लगती हैं तो समझ आ जाता है कि बतकम्मा पर्व आ गया है और संपूर्ण तेलंगाना में मातृशक्ति के प्रति सम्मान और प्रकृति प्रेम का सैलाब उमड़ रहा है।

इस पर्व में एक प्रतीकात्मक पुष्पों की प्रतिमा बनाई जाती है, जिसे बनाने के लिए कई रंगों के फूलों का उपयोग किया जाता है। इसलिए इसे रंगों का त्योहार भी माना जाता है। पूरे तेलंगाना में यह बतकम्मा पर्व नौ दिनों तक मनाया जाता है। इसमें बहुत सुंदर तरीके से फूलों से अलग-अलग आकृतियां बनाई जाती हैं, इसमें प्रयोग किए जाने वाले ज्यादातर फूल आयुर्वेदिक दृष्टि से भी उपयोगी होते हैं। इसमें फूलों से सात परतों से मंदिर के गोपुरम जैसी आकृति बनाई जाती है। तेलुगु भाषा में बतकम्मा का मतलब होता है, देवी मां जिंदा हैं। इस दिन बतकम्मा को महागौरी के रूप में पूजा जाता है, यह पर्व स्त्रियों के सम्मान के रूप में मनाया जाता है।

कब मनाया जाता है: हिंदू पंचांग के अनुसार यह पर्व श्राद्ध पक्ष, भादो की अमावस्या, जिसे महालय अमावस्या भी कहते हैं, के दिन शुरू होता है और नवरात्र की अष्टमी के दिन खत्म होता है। ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार यह सितंबर-अक्टूबर महीने में मनाया जाता है। इस वर्ष यह पर्व 21 से 30 सितंबर तक मनाया जाएगा। यह मानसून के अंत में शुरू होकर शीत ऋतु के प्रारंभ तक मनाया जाता है।

ऐसे मनाते हैं पर्व: इस पर्व में फूलों से एक बड़े पर्वत जैसी आकृति बनाई जाती है। इसके सबसे ऊपरी भाग में हल्दी से गौरम्मा बनाकर उसे रखा जाता है। इस दौरान नाच-गाने का आयोजन किया जाता है। बतकम्मा का नाम बृहदाम्मा से ही उत्पन्न हुआ है। माना जाता है कि भगवान शिव-पार्वती को प्रसन्न करने के लिए यह त्योहार 1000 साल से उसी इलाके (वर्तमान तेलंगाना) में बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है।

जताते हैं प्रकृति के प्रति आभार: वर्षा ऋतु में सभी जगह पानी का प्रवाह होता है। नदी, तालाब एवं कुएं पानी से भर जाते हैं। उसके बाद धरती पर फूलों के रूप में पर्यावरण में बहार आ जाती है। इसी कारण प्रकृति का धन्यवाद देने के लिए तरह-तरह के फूलों के साथ इस पर्व को मनाया जाता है। इस त्योहार को मनाने के लिए नव विवाहिताएं अपने मायके भी आती हैं। मान्यता है कि उनके जीवन में परिवर्तन लाने के लिए यह प्रथा शुरू की गई थी।

पर्व के शुरुआती पांच दिनों में महिलाएं अपने घर का आंगन स्वच्छ करती हैं और उसको गोबर से लीपा जाता है। सुबह जल्दी उठ कर उस आंगन में सुंदर-सुंदर मुग्गु बनाती हैं। कई जगह पर ऐप्पन से चौक बनाया जाता है, जिसमें सुंदर कलाकृति बनाई जाती है। चावल के आटे से बनी रंगोली का भी बहुत महत्त्व है। इस उत्सव में घर के पुरुष बाहर से नाना प्रकार के फूल एकत्र करते हैं, जिसमें सलोसिया, सेन्ना, मेरीगोल्ड, कमल, ककुर्बिता, कुकुमिस और बहुत से अन्य फूलों को एकत्रित किया जाता है। फूलों की तरह-तरह की परतें बनाई जाती हैं, उनके नीचे फूलों की पत्तियों से सजाया जाता है, इसे थंबलम के नाम से जाना जाता है। नौ दिन तक हर शाम महिलाएं और लड़कियां एकत्रित होकर नाचती, गाती हैं, ढोल बजाए जाते हैं। सब अपने-अपने बतकम्मा को लेकर आती हैं। इस दौरान महिलाएं पारंपरिक साड़ी, गहने पहनती हैं और लड़कियां लहंगा चोली पहनती हैं। सभी महिलाएं बतकम्मा के चारों ओर गोला बनाकर क्षेत्रीय भाषा में गीत गाती हैं। महिलाएं अपने परिवार की सुख-समृद्धि और खुशहाली के लिए माता पार्वती से प्रार्थना करती हैं। अष्टमी पूजा के बाद बतकम्मा को तालाब के पानी में विसर्जित कर दिया जाता है। *

किसी भी ग्रह से टूटकर पृथ्वी पर गिरे उल्कापिंड उस ग्रह के इतिहास और उसकी संरचना को समझने में मदद करते हैं। इसका उपयोग गहनों एवं सजावटी वस्तुओं में भी किया जाता है। यही वजह है कि ग्रहों के इन टुकड़ों की कीमत बहुत अधिक होती है। जानिए इस बारे में विस्तार से।

महत्वपूर्ण और कीमती होते हैं ग्रहों से टूटकर गिरे उल्कापिंड

रोचक

अंजू जैन

हाल ही में मंगल ग्रह से आए एक उल्कापिंड, NWA 16788, की न्यूयॉर्क में 'गीक वीक 2025' नीलामी हुई है। यह उल्कापिंड पृथ्वी पर पाया गया अब तक का सबसे बड़ा मंगल ग्रह का टुकड़ा माना जाता है, जिसका वजन 24.5 किलोग्राम है। इसकी अनुमानित कीमत 15 से 30 करोड़ रुपए (लगभग 1.8 से 3.6 मिलियन अमेरिकी डॉलर) के बीच है।

क्या है NWA 16788: यह एक शर्गोटाइट उल्कापिंड है, जो मंगल ग्रह की भूगर्भीय संरचना के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देता है। यह सहारा रेगिस्तान में पाया गया था और मंगल ग्रह की सतह से उत्पन्न हुआ माना जाता है। इसकी सतह पर लाल-भूरी फ्यूजन क्रस्ट है, जो अंतरिक्ष में इसकी यात्रा के दौरान उच्च तापमान के कारण बनी। यह मंगल ग्रह की मिट्टी से बना है और इसकी उम्र लगभग 74.2 करोड़ साल पुरानी बताई जाती है।

वैज्ञानिक महत्व: यह उल्कापिंड मंगल ग्रह के इतिहास और संरचना को समझने में मदद करता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह उस समय के मंगल ग्रह की सतह का हिस्सा हो सकता है, जब वहां पानी मौजूद था।

मूल्य और विशेषता: इसकी कीमत 15 से 30 करोड़ रुपए के बीच अनुमानित है, जो इसे अब तक के सबसे महंगे उल्कापिंडों में से एक बनाता है।

क्यों होते हैं इतने महंगे: ग्रहों या उल्काओं से टूट कर पृथ्वी पर गिरे टुकड़े, जिन्हें उल्कापिंड कहा जाता है, कई कारणों से महंगे होते हैं। इनमें शामिल हैं-

दुर्लभता: उल्कापिंड अंतरिक्ष से पृथ्वी पर बहुत कम मात्रा में पहुंचते हैं। इनमें से कुछ विशेष प्रकार, जैसे चंद्रमा या मंगल ग्रह से आए उल्कापिंड, अत्यंत दुर्लभ होते हैं, जिससे उनकी कीमत बढ़ जाती है।

वैज्ञानिक महत्व: उल्कापिंड ग्रहों की उत्पत्ति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। वैज्ञानिक इनका अध्ययन ग्रहों की भौतिक-रासायनिक संरचना और प्राचीन इतिहास को समझने के लिए करते हैं, जिससे इनकी मांग बढ़ती है।

सौंदर्य और संग्रहणीयता: कुछ उल्कापिंडों में अनोखे पैटर्न (जैसे विडमैनस्टेटन पैटर्न) या रंग होते हैं, इस कारण इनका उपयोग गहनों या सजावटी वस्तुओं के निर्माण में भी किया जाता है।

उत्पत्ति: चंद्रमा, मंगल या विशिष्ट क्षुद्रग्रहों से आए उल्कापिंड अत्यंत मूल्यवान होते हैं, क्योंकि ये पृथ्वी के बाहर की सामग्री होते हैं। उल्कापिंडों को खोजने, पुनर्प्राप्त करने और उनकी प्रामाणिकता सत्यापित करने में समय, संसाधन और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व: कुछ संस्कृतियों में उल्कापिंडों को पवित्र माना जाता है, जैसे भारत में कुछ प्राचीन मंदिरों में रखे गए उल्कापिंड।

ग्रहों के टुकड़ों के प्रकार: ग्रहों से टूट कर पृथ्वी पर गिरे टुकड़ों के कई प्रकार होते हैं, जैसे-

उल्का पिंड: जब उल्का पृथ्वी के वायुमंडल से गुजर कर सतह पर पहुंचती है, तो उसे उल्कापिंड कहते हैं।

उल्का: अंतरिक्ष से पृथ्वी की ओर आने वाला पदार्थ जो वायुमंडल में जलता है और 'टूटता तारा' जैसा दिखता है।

क्षुद्रग्रह: अंतरिक्ष में चक्कर लगाने वाले बड़े चट्टानी पदार्थ, जिनके टुकड़े उल्कापिंड के रूप में पृथ्वी पर गिर सकते हैं।

चंद्र उल्का पिंड: चंद्रमा से उत्पन्न होने वाले उल्का पिंड।

मंगल उल्का पिंड: मंगल ग्रह से आए उल्कापिंड।

पैलासाइट: लोहे और सिलिकेट खनिजों से बने विशेष उल्का पिंड, जो अकसर सुंदर क्रिस्टल पैटर्न दिखाते हैं।

कोन्ड्राइट: सबसे आम उल्कापिंड, जिनमें सौरमंडल की प्राचीन सामग्री होती है।

इनके अलावा भी विभिन्न ग्रहों से टूटकर गिरे टुकड़ों या उल्कापिंडों के अलग-अलग कई प्रकार एवं अलग-अलग नाम होते हैं।

अब हम आपको अब तक मिले कुछ बेहद महत्वपूर्ण उल्कापिंड और उनकी कीमत के बारे में बताते हैं।

होबा उल्कापिंड: नामीबिया में 1920 ई. में पाया गया लगभग 60 टन वजनी यह उल्कापिंड अब तक का ज्ञात सबसे बड़ा एकल उल्कापिंड है। इसका बाजार मूल्य निर्धारित नहीं है, क्योंकि यह वहां की राष्ट्रीय संपत्ति है, लेकिन इसकी कीमत अरबों रुपए हो सकती है।

फुकांग पैलासाइट: साल 2000 में चीन में पाया गया यह उल्का पिंड पैलासाइट (लोहा और ओलिवाइन क्रिस्टल) कैटेगरी का है। यह अपने सुंदर क्रिस्टल पैटर्न के लिए प्रसिद्ध है। इस उल्कापिंड के इसके छोटे टुकड़ों की कीमत 20 से 50 डॉलर प्रति ग्राम तक हो सकती है।

चेल्याबिंस्क उल्कापिंड: साल 2013 में रूस में गिरा साधारण कोन्ड्राइट प्रकार का यह उल्का पिंड एक खास वजह से प्रसिद्ध है। दरअसल, 2013 में इसके गिरने से एक बड़ा विस्फोट हुआ था, जिसने इसे विश्व प्रसिद्ध बनाया। इसके टुकड़ों की कीमत 1 से 10 डॉलर प्रति ग्राम तक रही है।

नखला उल्कापिंड: मिस्र में साल 1911 में गिरा यह उल्कापिंड मंगल ग्रह से गिरे होने की पुष्टि वाला पहला उल्कापिंड है। इसकी कीमत प्रति ग्राम 100 से 300 डॉलर तक तक हो सकती है।

एलेंडे उल्कापिंड: मैक्सिको में 1969 ई. में गिरे कार्बोनेशियस कोन्ड्राइट प्रकार के इस उल्कापिंड में सौरमंडल की सबसे प्राचीन सामग्री और कार्बनिक यौगिक पाए गए हैं, जो जीवन की उत्पत्ति के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसकी कीमत प्रति ग्राम 1 से 5 डॉलर अनुमानित है। लेकिन इसके दुर्लभ टुकड़ों की कीमत अधिक हो सकती है। *

सिने संवाद

डी.जे. नंदन

बॉलीवुड फिल्मों की बात करें तो शुरुआत से लेकर अब तक की फिल्मी संवाद की भाषा हिंदी में अनेक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। हर अदाकार अपने अंदाज में हिंदी तो बोलता ही है, समय और पीढ़ी के अनुसार भी इसमें बदलाव आते रहे हैं। इन बदलावों पर एक नजर।

पहले के दौर से कितनी बदली बॉलीवुड फिल्मों की हिंदी

'राजी' में आलिया भट्ट के संवाद रहे असरदार

क्षेत्रीय प्रभाव से मुक्त हैं 'गुड लक जेरी' के संवाद

अगर आप हिंदी फिल्मों के शौकीन हैं तो बॉलीवुड फिल्मों में बोली जाने वाली आज की हिंदी में पिछली सदी के पचास, साठ, सत्तर और अस्सी के दशकों की बॉलीवुड फिल्मों में बोली जाने वाली हिंदी से कुछ अंतर महसूस करते होंगे। क्या फर्क है तब और अब की फिल्मों की हिंदी में, एक दृष्टि डालते हैं।

बीते दौर की बॉलीवुड फिल्मों में हिंदी: पिछली सदी के सत्तर और अस्सी के दशक के एक्टर्स की बात करें तो अमिताभ बच्चन की हिंदी बहुत समृद्ध थी, साथ ही उसमें हमेशा 'संवाद अदायगी' का एक मंचीय असर दिखता था। उनसे पूर्व दिलीप कुमार के संवाद इतने अधिक अभिनय केंद्रित हुआ करते थे कि दर्शक डायलॉग्स को सुनने की बजाय देखने लगता था। दिलीप

'उधम सिंह' में विक्की कौशल

कुमार के संवादों में हिंदी-उर्दू मिश्रित भाषा देखने को मिलती है।

ऐसे ही अभिनेता राजकुमार की संवाद अदायगी में उर्दू-शैली का असर दिखता था, जो उनकी अभिजातीय छवि का हिस्सा बनता था। उदाहरण के तौर पर फिल्म 'पाकीजा' में उनकी संवाद अदायगी को देखा जा सकता है। अपने जमाने में राजेश खन्ना या शत्रुघ्न सिन्हा जैसे अभिनेता अकसर अपने मूल क्षेत्रीय लहजों को पूरी तरह छोड़े बिना हिंदी बोलते थे। यह उस दौर में 'स्वाभाविक' ही माना जाता था।

अपने दौर की बेहतरीन अभिनेत्री स्मिता पाटिल भाषा को साधने में माहिर थीं। वह बहुत अच्छी हिंदी बोलती थीं। उनके द्वारा बोले गए संवाद बहुत गूंजदार, ठहराव से भरे होते थे। उनके संवादों में लयात्मकता होती थी और इसमें कविताई का आभास होता था। समग्रता में देखा जाए तो पिछली सदी के 70 और 80 के दशक में अभिनेता हिंदी को एक खास छंद, ठहराव और 'दबाव' के साथ बोलते थे। यह एक 'शास्त्रीय लहजा' था, जो दिलीप कुमार, अमिताभ बच्चन, शबाना आजमी, स्मिता पाटिल आदि कलाकारों की संवाद अदायगी में दिखता था।

आज के फिल्मों की हिंदी: हर दौर की अपनी एक अलग भाषा, संवाद का एक अलग सलीका होता है। यह बात हिंदी फिल्मों पर भी लागू होती है। आज की फिल्मों की हिंदी पहले की फिल्मों से बेहतर भले न हो, यह पहले की तुलना में अलग जरूर है और असरदार भी। आज फिल्मों में बोली जाने वाली हिंदी ज्यादा लचीली, संवादधर्मी और ग्लोबल शहरी अनुभव से जुड़ी है। यह किसी खास उच्चारण और लहजे में नहीं बोली जाती बल्कि यह हमारे-आपके जैसे सामान्य लोगों की तरह ही बोली जाती है।

हिंदी बोलने में दिखता है आत्मविश्वास: आज की पीढ़ी के अभिनेता और अभिनेत्रियां हिंदी को पूरे आत्मविश्वास से बोलते हैं। उदाहरण के तौर पर फिल्म 'सरदार उधम सिंह' के संवाद 'जो लहू नहीं खौला, वो लहू नहीं...' को देखा जा सकता है। फिल्म में विक्की कौशल पूरे आत्मविश्वास और गहराई के साथ हिंदी बोलते हैं। न संवादों में कोई बनावट, न हिचक। फिल्म के संवादों के उच्चारण में हिंदी की शुद्धता भले गायब हो, लेकिन हिंदी के लिए गर्व और सहजता यहां साफ देखा जा सकता है।

दिखता है सहज भाषाई प्रवाह: आज की बॉलीवुड फिल्मों में सहज भाषाई प्रवाह दिखता है। इसका एक खूबसूरत उदाहरण आलिया भट्ट की फिल्म 'राजी' है। इस फिल्म में

भाषा को साधने में माहिर थीं स्मिता पाटिल

एक कश्मीरी लड़की की भूमिका निभाते हुए आलिया ने जिस तरह की हिंदी बोली है, उसमें पानी जैसा बहाव है। कोई भी शब्द या संवाद अतिरिक्त जोर देकर नहीं बोला गया था, फिर भी ये असरदार थे।

क्षेत्रीय प्रभाव से मुक्त हिंदी: आज के दौर की फिल्मों में बोली जाने वाली हिंदी की एक और खास बात यह है कि आज के ज्यादातर अभिनेताओं और अभिनेत्रियों का उच्चारण और लहजा क्षेत्रीयता से मुक्त है। उदाहरण के तौर पर जान्हवी कपूर की 'गुड लक जेरी' को देखा जा सकता है। फिल्म में जान्हवी को बिहारी-पंजाबी पृष्ठभूमि का दिखाया गया है, फिर भी उनका उच्चारण क्षेत्रीयता से मुक्त 'न्यूट्रल शहरी हिंदी' जैसा है।

कैजुअल फ्लुएंसी पर जोर: आज के अभिनेताओं को मंचीय प्रशिक्षण, स्क्रिप्ट वर्कशॉप्स और संवाद को स्वाभाविक बनाने की ट्रेनिंग मिलती है। आज के दौर में संवाद अदायगी की नाटकीय शैली के स्थान पर रोजमर्रा की जिंदगी में बोली जाने वाली हिंदी और इसकी कैजुअल फ्लुएंसी पर जोर दिया जाता है। विक्की कौशल, राजकुमार राव, तापसी पन्नू, भूमि पेडनेकर, ये सभी संवादों में हिंदी को आत्मसात करके बोलते हैं। ये हिंदी को 'परफॉर्म' नहीं करते, बल्कि 'जीते' हैं।

कुल मिलाकर, फिल्मों में आज की पीढ़ी की हिंदी ज्यादा कैजुअल, लचीली और वास्तविक जिंदगी से जुड़ी लगती है। पहले के फिल्मों की हिंदी भाषा में 'भाषाई सौंदर्य' था, आज के फिल्मों की हिंदी में 'संवादिक सहजता' है। *